DAMAGE BOOK

Text Problem Book

स्वदेशाभिमान में

दान

हरिदास माणिक

प्रकाशक—श्री बैजनाथ केडिया,
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
ज्ञानवापी, काशी

शाखा

२०३ हरिसनरोड, कलकत्ता
गनपतरोड, लाहौर
दरीबा कलाँ, दिल्ली
बाँकीपुर, पटना

मुद्रक—रामशरण सिंह यादव
वणिक प्रेस
साक्षीविनायक, काशी

दो शब्द

राष्ट्रका भविष्य होनहार बालकोंपर ही निर्भर करता है और बालकोंका भविष्य अच्छे साहित्यपर ।

इस बीसवीं सदीके अन्तमें युवाओंको कर्म मार्ग बताने वाले काफी ग्रन्थोंकी रचनाएं हुई हैं और नित्य नई-नई होती जा रही हैं। साधारणतया उसका असर भी अच्छा ही पड़ रहा है ।

पर जबतक कोमल मति बालकोंके मनमें देश भक्तिके बीज नहीं बोये जायँगे तबतक युवा होते होते वे अन्य कई तरफ बहक जा सकते हैं और बहक भी रहे हैं ।

इसलिये देश भक्तिसे पूर्ण ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करनेकी आवश्यकता है जो दस बारह सालके बालक भी मजेमें पढ़ और समझ सकें ।

श्रीयुत् हरिदास माणिकने देशकी इस आवश्यकताको समझा, अध्यापन कार्यमें कई सालसे लगे रहनेके कारण बाल मनोवृत्तिका उन्होंने बहुत पाससे अध्ययन किया है और उनकी आत्मशक्तिके विकाशकी आवश्यकता की पूर्तिके लिये उन्होंने बहुत पहले से ही छोटे-छोटे ऐसे सच्चे चरित्रोंका संग्रह करना आरम्भ कर दिया था कि जिनके पढ़नेसे बालकोंके मनमें उत्साह

वृद्धिके साथ-साथ स्वदेशाभिमान और आत्मत्यागकी वृत्तिका भी विकाश हो।

श्रीमानिकजी बालकोंके शारीरिक और चरित्रबल बढ़ानेका काम तो बराबरसे कर ही रहे थे किन्तु अब उनका आत्मबल बढ़ानेका काम भी इस तरहकी पुस्तकें लिखके या संग्रह करके उन्होंने आरम्भ कर दिया है।

उनका यह "स्वदेशाभिमानमें बलिदान" एक बहुत सुन्दर संग्रह हुआ है। इसकी कहानियां छोटी-छोटी हैं, पर सच्ची होनेके कारण बहुत ही प्रभावोत्पादक हैं। इसमें देशी और विदेशी दोनों तरहके स्वदेश भक्तोंके उदाहरण दिये गये हैं, जिससे इसकी रोचकता काफी बढ़ गई है।

हमारी दृष्टिमें श्री माणिकजीका यह प्रयत्न सर्वांशमें सफली भूत हुआ है।

आशा है यह पाठशालाओंमें पाठ्यक्रममें सम्मिलित करके बालकोंको इससे पूरा लाभ उठानेका अवसर दिया जायगा।

साक्षीविनायक
२०-५-३९

भवदीय—

—प्रकाशक

स्वदेशाभिमान में बलिदान

१

'देशद्रोही पतिको जीवित नहीं रखना चाहिये'

प्राचीन समयमें अलाउद्दीन नामी बादशाहने दक्खिन देश-पर अपना मुसलमानी झण्डा फहरानेके लिये बड़ी भारी सेना भेजी। सेना क्या थी मानो प्रलयके बादल थे। इस समय विजयनगरमें रामराजा शासन कर रहे थे। रामराजाने अपनी कन्याके विवाहमें वीरमती नामी एक कुमारी कन्याको अपने सेनापतिको उपहार स्वरूप दिया। सेनापतिका नाम कृष्णराव था। कृष्णराव यद्यपि धीर वीर था पर घूस लेकर वह मुसल-मानोंसे मिल गया। जिस समय मुसलमानी सेना विजय नगर-के गढ़को घेरे थी। उसी समय कृष्णराव गुप्त रूपसे आधी रातको शत्रुओंसे जा मिला। इसी समय उसकी भावी पत्नी वीरमती भी घोड़ा कसाकर पीछे पीछे चली। थोड़ी दूर पहुंचकर उसने देखा कि उसके पतिने मुसलमान अफसरको एक पत्र दिया। वीरमतीको कुछ सन्देह हुआ। कृष्णरावने ज्योंही आगे बढ़कर

कहा कि हां सब ठीक है। इतने ही पर वीरमतीने पीछेसे तलवारका एक वार किया। वार खाली गया। दूसरे तीसरे वार भी खाली गये। चौथे वारमें कृष्णराव जमीनपर गिर पड़ा। घोड़ा उसका भागा। अपनी छातीपर अपनी भावी पत्नीको पाकर उसने माफी मांगी, पर वीरमतीने कहा—'देशद्रोही पतिको जीवित नहीं रखना चाहिये।' यह कह उसने कृष्णरावको मार डाला और आप भी कटार भोंककर मर गयी। जब रामराजाको इस देशभक्तिका पता लगा तो उनके हर्षकी सीमा न रही। इसी बीचमें रामराजाकी सेना तैयार हो गयी और अलाउद्दीनकी सेनाको मार भगाया। यह विजय वीरमतीके कारण ही प्राप्त हुई थी। इसलिये उसकी एक यादगार बनवा दी गई।

'हम लोग अस्पताल न जायंगे'

२

सन् १९०४की ३१ वीं अगस्तकी बात है कि जापानी सेनाने शुशान पर्वतको घेर रखा था। यहां रूसियोंने ऐसी जबरदस्त मोरचेबन्दी की थी जिसका वर्णन करना अधिक समयका लेना है। पर संक्षेपमें यही कहा जा सकता है कि किलेके चारों ओर खाइं और दुर्गम दीवारें रहती हैं पर यहां खाइं तो अथाह हैं ही पर साथ ही इस खाईके बीचमें ऐसे अनेक कुएं तैयार किये गये थे जो गहराईमें विशेष गहरे न थे पर साथ ही उनकी बना-

चट ऐसी थी जिससे आक्रमण करनेवाली सेना उसमें बराबर गिरती जाय। ये कुएँ ऊपरसे तो चौड़े थे पर नीचे सकरे होते चले गये थे। बीचमें एक नुकीला लोहेका लम्बा कांटा गड़ा रहता था जो गिरता था वह इसी कांटेपर गिरता था। उसका शरीर छिद जाता था और वह तत्काल मर जाता था। अन्तमें कई बार चढ़ाई करनेपर भी जापानी सेना तीन चार बार पीछे हटी। जब जापानियोंकी बीस हजार सेना घायल हुई तो उन्हें उठानेके लिये रेडक्राम आया। डोलीवालोंसे घायलोंने कहा कि 'हमलोग अस्पताल न जायँगे' वरन् इसी कुएँमें ढकेल दो ताकि वह भर जाय और भविष्यमें आक्रमण करनेवाली सेना उसमें न गिर सके। जब यह खबर जेनरल ओकूको दी गई तो पहले तो उन्होंने ऐसी आज्ञा देनेसे इनकार कर दिया पर पीछे जब उन्हें यह मालूम हुआ कि घायल लोग उसी कुएँमें ही घिसकते-घिसकते गिर रहे हैं तो उन्होंने उनकी इच्छा पूरी की जानेकी आज्ञा दी। अस्तु, बीस हजार घायलोंमेंसे एक व्यक्ति भी ऐसा न मिला जो अस्पताल जानेकी इच्छा प्रकट करता। इस कार्यसे सारे कुएं पट गये और जापानी सेनाने बड़ी ही आसानीसे शुशानका दुर्भेद्य किला ले लिया। धन्य थे वे जापानी वीर जिन्होंने कुएँमें अपनेको फेंककर स्वदेशकी सेवा की।

———

'सबकी आहुति कर देता ।'

३

महाराष्ट्र देशके पूना नगरीमें सावरकर भ्राता रहते थे । संयोगसे इन्हें स्वदेश प्रेममें कालेपानीकी सजा मिली । इस भारतीय क्रांति यज्ञके प्रथम पुरोहित श्रीगणेश सावरकरकी धर्मपत्नी भी इन्हींकी तरह स्वदेशके नामपर मर मिटनेवाली थी । उसका तो कहना था कि महाराष्ट्र देशमें पुरुषवाजी प्रभु व स्त्रियां राजपूतानेकी महिलाओंकी तरह हैं ।

जब श्रीमती यशोदा बाईके पूज्यपति गणेश सावरकरको सजा मिल चुकी तब उन्हें आशा थी कि उनका देवर विनायक सावरकर इंग्लैंडसे लौटकर आवेगा, लेकिन आया क्या ब्रिक्सटन जेलसे मृत्यु पत्र । आखिरी पत्रमें लिखा था कि—"भावज हमने अन्धा होकर यह व्रत नहीं लिया था किन्तु लिया था इतिहास और मानव प्रकृतिके पूर्ण प्रकाशमें खूब जानते हुए कि जीवनकी आहुति देनी पड़ेगी । मेरा वीर अग्रज तेरी ही वोटपर बलि हुआ । छोटा भाई उसीके पीछे आगमें कूद पड़ा । अब मैं भी मां तेरेही यज्ञ स्तूपपर बंधा हूं । क्या हुआ यदि हम तीनके बदले सात भी होते तो तेरे यज्ञमें मैं 'सबका आहुति कर देता ।' कैसा सुन्दर पत्र है । स्वदेश सेवाके प्रेममें पगे पुजारीने अपने इष्टदेवके सम्मुख अपना सर्वस्व दे डाला ।

'हमसब जल मरेंगे'

४

शाही नदीकी लड़ाईमें रूसी परास्त हुए। पर्वतपर पर्वत उनके हाथसे निकल गये। मैदानमें आकर वे बड़े ही संकटमें पड़े। ऊपरसे बर्फ गिरता था। सामनेसे गोले गिरते थे। कहीं शरण न थी। पानीका भी बड़ा कष्ट था। लाखोंकी तादादमें दोनों पक्षकी सेना शाही नदी हीसे पानी लेती थी। एक दिन पानी भरते समय एक रूसी सिपाहीने कहा कि हम लोगोंको कोयले बिना बड़ी तकलीफ है। जापानी सैनिकने यह बात जाकर जेनरल ओकू और भोजूसे कह दी। ओकू और भोजूने कहला भेजा कि फौजको ठंडकसे बचानेके लिये जेनरल कुरोपटकिनके पत्रपर हम प्रचुर प्रमाणमें कोयला दे सकते हैं। जेनरल कुरोपटकिनने इस सन्देशको अपमानजनक समझा।

उधर येनताईकी खानपर कुरोकीका अधिकार था, अस्तु इस सदेशका बदला लेनेके लिये कुरोपटकिनने लेफ्टिनेन्ट अलकजेन्डरको एक हजार सेनाके साथ भेजा। रातमें एकाएक रूसी सेना जापानी सेनाकी चौकीपर टूट पड़ी। जापानियोंकी संख्या काफी न थी। अन्तमें अपनेको चारों ओरसे घिरा हुआ देखकर जापानियोंने भी लड़ना आरम्भ किया। रूसियोंने गांवमें आग लगा दी। जापानी सेनाके चारों ओर आग ही आग दिखाई पड़ने लगी। केवल एक ओर छूटा था। उस

ओर रूसी तोपखाने लगे थे। रूसी कप्तानने आत्म समर्पण करनेके लिये कहा पर जापानियोंने कहा—'हमसब जल मरेंगे' पर आत्मसमर्पण नहीं करेंगे, अन्तमें सारी सेना जल मरी। पीछे जापानियोंका एक हजार रिसाला आया पर तबतक रूसी सब ले देकर चल दिये थे।

'मां मुझे बरदान दो'

५

जिस तरहसे भारतवर्षके पिछले इतिहासमें शिवाजीका एक विशेष स्थान समझा जाता है, आज ठीक उसी प्रकार कमाल-पाशाका जीवन भी एक विशेष महत्त्वका है। जिस प्रकार शिवाजी पहले एक साधारण सिपाही थे उसी प्रकार कमाल भी एक मामूली सिपाही थे। शिवाजीसे जिस प्रकार यवनोंका साम्राज्य विस्तार न देखा गया उसी प्रकार कमालसे भी कूटनीतिज्ञोंके हाथोंसे टर्कीके टुकड़े २ हो जाना न देखा गया। शिवाजीको भी बहुतसे मक्कार और दगाबाज लोग हिन्दुस्थानकी स्वतन्त्रताका रक्षक न कह लुटेरा और डाकू कहते थे। इसी प्रकार कमालको भी टर्कीका शत्रु और स्वार्थी कहा जाता रहा और इसीलिये कमालपाशाको अपनी प्यारी टर्की भी छोड़नी पड़ी थी। परन्तु आज वही कमालपाशा है जो शिवाजी की तरहसे शत्रुओंके दांत खट्टे कर लोहा ले रहा है।

शिवाजीकी माताने ही शिवाजीको रणभूमिमें आनेका उप-

देश दिया था। छतपर नहाती हुई शिवाजीकी मातासे सिंहगढ़की पराधीनता न देखी गयी; इसीलिये शिवाजीकी माताने शिवाजीसे कहा कि "बेटा सिंहगढ़ फतह करो।" बस माताका यह कहना था कि वीर शिवाजीने अपनी खूंटीपर लटकी हुई तलवारको जाकर सम्भाला और माताके चरणोंमें शीश नवाकर तलवारको चूमते हुए मारू बाजा बजाया और सिंहगढ़को विजय किया। ठीक इसी प्रकार अपनी माताके अनन्य भक्त कमाल-पाशा इधर तो स्मर्नाके एक धनाढ्यकी युवतीसे विवाह करता है और उधर ब्याहके दूसरे ही दिन अपनी मृत माताकी कब्रपर सिर झुकाते हुए इस बातकी प्रार्थना करता है कि, 'माँ मुझे वर-दान दो, कि मैं अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिये निकली हुई म्यानमेंसे तलवारको उस समयतक पुनः न रक्खूं जबतक मेरा देश स्वतन्त्र न हो जाय।' पराधीनताके गर्भमें पड़े हुए भाइयो। देखो स्वतन्त्रताके दीवाने किस तरहसे अपनी प्राण प्यारियों तकका मोह छोड़ देशकी स्वतन्त्रताका प्रयत्न करते हैं।

अपनी अपनी माताओंके सच्चे पुजारी वीर शिवाजी और जाती मुस्तफा कमालपाशा तुम धन्य हो।

'एक गोली और स्वराज स्वराज'

६

तेरहवीं अप्रैलका दिन था। लोगोंकी सभा जलियानवाला बागमें हो रही थी। सभा क्या थी बल्कि राजाके विरुद्ध प्रजाकी

पुकार थी। लोग अपने देशका दुखड़ा रोनेके लिये एकत्रित होकर व्याख्यान दे और सुन रहे थे। व्याख्यानमें बालवृद्ध सभी उपस्थित थे। भारतकी जागृतिके कारण माताएं भी देशकी पुकार-पर सभामें आई थीं। किसीकी गोदमें बच्चा था तो कोई अपने बड़े बच्चेकी अंगुली पकड़े सभाके चारों ओर खड़ी थीं। कोई पिता अपने पुत्रके सामने देशकी वर्तमान दशाका चित्र खींच रहा था। ऐसे समयमें तड़ तड़ करके गोली पड़ने लगी।

गोली तो चलने ही लगी, साथ ही जनताने पीछे फिरकर देखा कि मेशीनगन भी गोरखे और गोरे चलाने लगे हैं। बड़ी विपत्ति आई। लोगोंके हवास गुम हो गये। पर किया क्या जाय। कितने ही गिरे, कितने ही मरे, कितने ही स्वर्ग सिधारे। स्त्री पुरुष बाल-वृद्ध सभी मरे, गिरे और घायल हुए।

इसी मारामारीमें एक दस वर्षके मदन मोहन नामी बालकको गोली लगी। बालकने गोली खाते ही आगे बढ़कर कहा "एक गोली और स्वराज स्वराज"। यह कहकर बालक जमीनपर गिर पड़ा। केवल 'एक गोली और तथा स्वराज स्वराज' वाली बात प्रत्येक भारतवासीके कानोंमें गूंजती रह गई।

'मैं नुकसान सहनेको तैयार हूं'

७

सन् १७७५ ई० में अमरीकन सैनिकोंने बोस्टन शहरके चारों ओर घेरा डाल दिया। घेरा तो डाल दिया पर उसपर गोलाबाज

करनेमें अमरीकनोंका ही नुकसान विशेष था। हानाक नामी एक अमरीकन व्यापारीका बहुत माल बोस्टन शहरमें गंजा हुआ था। सेनाध्यक्षने गोलाबारी करनेके पहले हानाकको बुलाकर पूछा कि हम इस शहरपर गोला बरसायें पर इसमें तुम्हारा करोड़ोंका नुकसान है। इसपर वीर हानाकने कहा मुझे इसकी परवाह नहीं कि मेरा करोड़ोंका माल नुकसान हो। मैं अमरीका के लिये "नुकसान सहनेको तैयार हूं" आप गोला बरसाइये।

वीर हानाककी बात सुनकर सेनाध्यक्षने तुरन्त बोस्टन नगरपर गोला बरसाना आरम्भ कर दिया। परिणाम इसका यह हुआ कि अंग्रेज तुरत उस नगरको छोड़ भागे। बोस्टनपर फिर अमरीकन झण्डा फहराने लगा।

सन्धिकी समाप्तिपर जब अमरीकाके बड़े-बड़े लोगोंके हस्ताक्षर हुए हैं तब उनमें सबसे पहले वीर हानाकके ही हस्ताक्षर थे। जिस स्थानपर उसका माल था वहां एक पत्थरपर खुदवाकर लगा दिया गया कि—"मैं नुकसान सहनेको तैयार हूँ।" "हानाक।" अमरीकन पाठशालाओंमें बालकोंकी पुस्तकोंमें इनका भी एक पाठ रहता है।

'हे चालीस युवको तुम धन्य हो'

८

गुरुगोविन्द सिंहकी विशेष बढ़ती देख औरङ्गजेबकी आज्ञा से लोहेके ताजिमने उन्हें आनन्दपुरमें चारों ओरसे घेर लिया।

गुरुगोविन्द सिंहके पास जितनी सेना थी वह कट मरी। केवल थोड़ेसे वीर किलेके भीतर रह गये। इनमें भी कितने भूखों मरने लगे। अन्तमें जब प्राण बचनेकी कोई आशा न रही तब कितने ही सिख गुरुगोविन्द सिंहको छोड़कर चलते बने। गुरुगोबिन्द सिंहकी हार हुई। छद्मवेषमें गुरुगोविन्द सिंह एक ओर निकल भागे।

परमात्माकी कृपासे कुछ दिनोंके बाद जब गुरुगोविन्द सिंह ने बल पकड़ा तब मुसलमानोंको कितने ही स्थानोंपर हराया। सिखोंको फिर जोर पकड़ते देख पंजाबके मुसलमान जहां तहां सिखोंपर टूट पड़ते थे। एक दिन गुरुगोविन्द सिंह ढलवा नामी गांवमें पड़ाव डाले थे कि कुछ सिख जो आनन्द गढ़में हस्ताक्षर कर चलते बने थे आ मिले और हाथ जोड़ पुराने कसूरोंके लिये क्षमाप्रार्थी हुए। गुरुगोविन्द सिंहने उन्हें कुछ नहीं कहा केवल दबी जबानसे यही कहा कि उस समय तुम कर्तव्य हीन हुए थे भविष्यमें कर्तव्य पालनकर अपने पापोंका प्रायश्चित कर लो। सब सिख संग हो लिये पर उनके चित्तसे पूर्व पापका खुटका न गया। उन्हें जो मिलता वही धिक्कारता। सब यही कहते कि जो गुरु तुम्हारे लिये सब कुछ सहता है यहांतक कि उसने अपने चारों लड़के तुम्हारे लिये दे डाले, तुम्हें असभ्यसे सभ्य बनाया, तुम लोगोंने उसी गुरुको छोड़ दिया। धिक्कार है तुम्हारे जीवनको। लोगोंसे तिरस्कृत होकर भी सिखों ने गुरुका संग न छोड़ा।

एक दिन सरहिन्दके सूबाको यह समाचार मिला कि गुरु गोविन्दसिंह फिर मालवामें जोर पकड़ रहा है। अस्तु उसने एक हजार सेनाके सहित कूच किया और गुरुगोविन्द सिंहको घेर लिया। दोनों ओरसे खूब लड़ाई हुई। इसी समय आनन्दपुरके भगोड़ोंमेंसे चालीस सिखोंने अपनी वीरताका परिचय दिया। सब तलवार ले लेकर मुसलमानी सेनापर टूट पड़े और उन्हें तीन तेरह कर डाला। इन चालीस वीरोंने तीन घण्टे तक शत्रुओंको रोक रखा तबतक और सिख सेना आ गई। फिर मार काट आरम्भ हुई। जब मुसलमानोंको यह मालूम हुआ कि रणक्षेत्रमें आसपास दस कोसके भीतर जल नहीं मिलेगा और जिस तालाबमें जल है वहां सिखोंकी सेना है। तो वे चारों ओर भागे। सिखोंने पीछाकर बहुतोंको मार डाला।

युद्धके बाद जब गुरुगोविन्द सिंहको मालूम हुआ कि पश्चात्ताप करनेवालोंमेंसे चालीस सिखोंने हमारे लिये प्राण गंवाया तब उनके हर्षकी सीमा न रही। चालीस वीरोंमेंसे महासिंह बचा था। उसने डबडबाई आंखोंसे कहा—गुरुवर वह कागज फाड़ डालिये जिसमें हम लोगोंने आपको छोड़ देनेके लिये हस्ताक्षर किया था। गुरुगोविन्दने उसीके सम्मुख कागज फाड़ दिया। महासिंहने प्राण छोड़ दिया। महासिंहके मरनेपर गुरु गोविन्द सिंहने कहा—वीरो तुम्हीं जीव मुक्त हुए अस्तु "हे चालीस युवकों तुम धन्य हो।"

'मैं सूलीपर चढ़ जाऊँगा पर निर्दोष जनता पर गोली न चलाऊंगा'

१

जारके सैनिक शासनके कारण रूसकी किसान प्रजा बड़ी पीड़ित रहा करती थी ! कल कारखानोंमें अधिकतर किसान ही काम करते थे । इन्हें मजदूरी बहुत कम मिलती थी और इनके लिये यह भी एक नियम था कि आवश्यकता पड़नेपर वे युद्धमें भी काम करनेके लिये भेजे जा सकते हैं ।

सन १९१७ ई० की ८वीं मार्चको मजदूरोंने इस नियमपर एतराज किया । जारकी ओरसे गोली चलानेका सामान ठीक हुआ । मशस्त्र पुलीस बुलाई गई । मजदूरोंको हड़ताल बन्दकर काम करनेके लिये कहा गया । मजदूरोंने एक न सुनी । वे मरने पर तैयार हो गये पर कामपर जाना न चाहा । पुलीसको गोली चलानेकी आज्ञा दी गई । पुलीसने यह कहकर गोली चलानेसे साफ इनकार कर दिया कि "मजदूरोंकी मांग ठीक है । पुलीस गोली नहीं चला सकती ।"

पुलीसके इस उत्तरपर उसे आज्ञा मिली "अगर पुलीस गोली न चलावेगी तो कज्जाक सवार गोली चलावेंगे । इसपर भी पुलीसने न माना । अन्तमें कज्जाक सवारके लोगोंने पूछा अगर पुलीस गोली न चलावेगी तो पुलीस पर ही गोली छोड़ो

जाती है। पुलीसने कहा है गोली चलाओ। यह कहकर पुलीस ने ही पहले कज्जाक सवारोंपर गोली चलाई। दोनोंमें गोली चली। दोनों दलके कुछ न कुछ लोग मरे। अन्तमें पुलीस दलका अफसर पकड़कर फांसी दे दिया गया। उसने सूलीपर चढ़ते समय कहा—"मैं सूलीपर चढ़ जाऊंगा मगर निर्दोष जनतापर गोली न चलाऊंगा।"

'यह मेरे पतिको दे देना'

१०

रूपनगरपर औरंगजेबने धावा बोल दिया। धावा बोलनेका कारण यही था कि रूपनगरकी राज-कन्याने औरंगजेबके प्रति कुछ कटु वचन कहे थे। अस्तु जब रूपनगर चारों ओरसे घिर गया तब रूपनगरके राजाने उदयपुरके राणाजयसिंहसे सहायता मांगी। जयसिंह तुरन्त अपनी सेना लेकर चल पड़े। उदयपुरके राणा चले ही थे कि नौजवान सलुबर सरदारने आकर कहा घणीखमा अन्नदाताजी मैं आगेसे बढ़कर नाके बन्दी करता हूँ। जयसिंहजीने आज्ञा दे दी। सलुबर सरदारने रणमें जानेके पहले अपनी नव विवाहिता स्त्रीसे बिदाई ली। थोड़ी दूर जाकर वे फिर लौट आये। अपनी स्त्रीसे बोले, देखो मेरी लज्जा रखना कहीं ऐसा न हो कि हमारी नाम हंसाई हो। वीर क्षत्राणीने उत्तर दिया नाथ आप निश्चिन्त जाइये किसी बातकी चिन्ता न करिये। सलूवर सरदार फिर रणके लिये चले गये। थोड़ी दूर

जाकर फिर एक दासको भेजा और उससे कहा कि मेरी स्त्रीको जता देना कि मैं उसे हर वक्त याद किया करता हूँ, मेरी गैरहाजिरीमें मेरे कुलकी इज्जत रखेगी। वीरपत्नी फिर निश्चिन्त होकर युद्ध करनेके लिये कहा। दास संदेशा लेकर चला गया। जब सलूवर सरदार दस कोसकी दूरीपर पहुँच गये तब फिर एक दासीसे कहला भेजा कि मैं तो युद्धमें हूं! मैं बहुत ही शीघ्र प्राणप्यारीसे आकर मिलूंगा। तबतक धीरज धारण कर सतीत्वकी रक्षा करें। इस संदेशेपर वीरक्षत्राणीको क्रोध आ गया। उसने तुरन्त एक कमरेमें जाकर अपना सिर काटकर दासीके हाथपर रखकर अपने पतिको देनेको कह दिया साथ ही एक पत्र कटे सिरके साथ रख दिया जिसमें लिखा था कि 'देशके लिये निश्चिन्त हो जान दे दो।' अपनी दासीको यह सन्देश देकर वह सदाके लिये सो गई।' सलूवर सरदारकी दासीने वीर क्षत्राणीका सिर ले जाकर सलूवर सरदारको दे दिया। सलूवर सरदार भी एक आह भरकर रणक्षेत्रके लिये चल पड़े।

'अभी चार शून्य बाकी हैं'

११

गत २७ वीं जनवरीको एसेन (जर्मनी) में कुछ उपद्रव हुआ। उपद्रवमें विशेषकर जर्मन थे, पर ऐसा कहा जाता है कि इनको उभाड़ने वाले फ्रांसीसी और बेलजियन अधिवासी थे। इस साधारण उपद्रवमें बेलजियन लेफ्टनेन्ट प्राफ मारे गये।

इस हत्याके सम्बन्धमें ग्यारह जर्मन पकड़े गये। असली हत्या करनेवालोंको तो पुलीस पकड़ नहीं सकी पर जो सामने मिला और जिसपर शक रहा उसे बेलजियनोंने पकड़ लिया।

दूसरे ही दिन फौजी अदालतमें ग्यारहों अभियुक्त पेश किये गये। मुकद्दमेमें सभीने कहा हमलोग निर्दोष हैं, हम नहीं जानते कि किसने हत्या की है। भीड़ भाड़में किसीकी गोली लग गयी होगी। हमारा सिद्धान्त गोली मारनेका नहीं है बल्कि गोली खानेका है। इसपर फ्रांसीसी अदालतने चार जर्मनोंको फांसीका हुक्म दिया। अन्य ६ अभियुक्तोंको २० वर्षसे लेकर ३० वर्षतककी सजा दी गयी। केवल एक छोड़ दिया गया।

सामने ही टिकठी खड़ी थी। बीच सड़कमें फांसी दी जाती थी। चारो जर्मनोंने मरते समय कहा—"फ्रांसीसी जज अभी तो चार ही जर्मन फांसीकी टिकठी पर चढ़ रहे हैं, अभी चार शून्य बाकी हैं "फ्रांसीसी जज होशियार था उसने कहा—"शून्य और गोलीकी शकल एक होती है। उनकी भी बारी जल्दी ही आवेगी।" इसपर फांसी पाने वाले चार जर्मनोंने कहा—'जल्दी कैसा वह देखो सामने जर्मन भीड़ खड़ी है। उनपर गोली चलाओ। वे सत्याग्रही हटने वाले नहीं।" इतना कहकर चारो जर्मन फांसीके तख्तेपर बारी बारी चढ़ गये।



'जोहरा बाईका जौहर देखो'

१२

अभी मेवाड़के उदयसिंह छोटे ही थे। राणा संग्रामसिंह मर चुके थे। राजपर सिवाय एक बालकके और कौन था। बड़े बड़े सरदार कुछ तो बाबरसेही लड़ भिड़कर स्वर्ग चल बसे थे और कुछ उदयपुरके घेरेमें मारे जा चुके थे। इस समय मेवाड़-पर भारी विपत्ति थी। दिल्लीकी गद्दीपर हुमायूं बैठ चुका था।

मेवाड़को विपत्तिमें जान गुर्जराधीश बहादुरशाहने चढ़ाइ कर दी। साथमें वह कई एक फिरंगी तोपचियोंको भी लेता आया। परिणाम यह हुआ कि उदयपुरका किला टूटने टूटने हो गया। जब किलेके पतनका निश्चय हो गया उस दिन उदय-सिंहकी माता जौहर बाई अपने सैनिकोंको लेकर गढ़से बाहर हुई। सुना जाता है कि संगमें एक रिसाला स्त्रियोंका भी था। अस्तु सामने शत्रुओंको पाकर जौहर बाई दुश्मनोंपर टूट पड़ी। लोहा झरने लगा। खूब घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें शत्रुओंके मुर्देके साथ साथ जौहर बाई भी धराशायी हुई। वह यह कहती हुई गिर पड़ी कि "जौहर बाईका जौहर देखो।"

परिणाम इसका यह हुआ कि यद्यपि किला शत्रुओंके हस्त-गत हुआ पर उदयसिंहको सरदार लोग अन्य किलेमें रख आये। उदयसिंह जौहर बाईकी अनुपम वीरतासे बच गये। धन्य थी श्री जौहर बाई जिसने मेवाड़की रक्षामें अपने प्राण गंवाये। संसारमें ऐसी ही स्त्रियोंका होना सार्थक होता है।

'साठ मीलपर पेट्रोग्रेड'

१३

रूसी सेनाकी अव्यवस्थित दशासे पूरा फायदा उठाकर जर्मनसेना दिनपर दिन आगे बढ़ने लगी। हिंडनबर्ग और लुन्डेन डर्फने फ्रांसकी रण भूमिपर आक्रमण करनेका विचार किया था, पर रूसी सेनामें गड़बड़ी देख अधिक सेना फ्रांसके सरहदसे हटाकर रूसके रीगा प्रान्तमें भी भेजी। जर्मन सेनापति फाइरियरने इस प्रान्तपर धावा किया। ५ सितम्बरको डवीना नदी पारकर अपना पड़ाव डाल दिया। यहांसे पेट्रोग्रेड-विजयका सारा प्रबन्ध होने लगा। रूसमें कैसी सरदी पड़ती है यह सारा संसार जानता है। सितम्बर मासमें खासी सरदी पड़ने लगी। सेनापति फाइरियरने जिस ओर जासूस भेजा उसी ओर वे पकड़े गये और मारे गये। अधिक बर्फमें ही गल पच गये। एक जर्मन जासूस रूसी किसानका वेष धारणकर राजनगर पेट्रोग्रेड-की ओर गया और बड़ी कठिनाईसे सड़क नापकर दूरीका पता लगा लाया। जिस समय वह लौट रहा था उस समय बर्फ और भी जोरोंसे पड़ने लगी। यहांतक कि अपने खेमेमें पहुँचते २ बेचारा जर्मन जासूस मृतप्राय हो गया। यदि वह ठहर जाता तो उसकी जान बच जाती, पर ठहरनेसे वह पकड़ जाता। अपनी देश सेवाके उमंगमें वह अपने खेमेंतक रातोरात चला आया पर खेमेके पास आकर गिर पड़ा। उसने मरते समय सारा लिखा

हुआ भेद और कागज जर्मन अफसरके सिपुर्दकर दिया। एक चीज लिखना वह भूल गया था। वह थी रीगासे पेट्रोग्रेडकी दूरी। उसने चिल्लाकर कहा—"साठ मीलपर पेट्रोग्रड साठ मीलपर पेट्रोग्रेड।"

पर यह अब्दुलकरीमजी जोड़े पाखाने न जायगा

१४

बरेली जेलसे हालमें छूटे हुए असहयोगी कैदी श्रीमुरलीधर गुप्त (मझौली राज्य जिला गोरखपुर) लिखते हैं—

ता० ७-३-२३ को एक नम्बरदारने सर्किल इंचार्ज नं० ३ सेमी सर्किलसे रिपोर्ट की कि डाक्टर अब्दुल करीम पाखाने जोड़े जोड़ेसे नहीं जाते हैं।

सुपरिन्टेन्डेन्टने डाक्टर साहबसे पूछा—क्यों आप जेलके कायदेको नहीं मानते और कैदियोंको क्यों बहकाते हैं? जोड़ेसे पाखाने क्यों नहीं जाते? इसपर डाक्टर साहबने कहा—हम सुबहके वक्त जोड़े जोड़ेसे पाखाने कभी नहीं जा सकते ; क्योंकि जोहराकी नमाजका वक्त टल जायगा। इसपर सुपरिन्टेन्डेन्टने नाखुश होकर कहा, यह जेल है। इसपर डाक्टर साहबने उत्तर दिया—नमाजका समय नहीं टाला जा सकता। धार्मिक बातोंके टालनेका अधिकार किसी बशरको नहीं है। अगर तुम्हें खुदाई-

का दावा है तो तुम टाल सकते हो, परन्तु डाक्टर अब्दुल करीम जीते जी न कभी जोड़े पाखाने जायगा न नमाजका वक्त ही टाल सकेगा। बादको सुपरिन्टेन्डेन्टने डाक्टर साहबको सात रोजकी खड़ी हथकड़ी ९ घंटे प्रतिदिनके हिसाबसे दी।

ता० ११-३-२३ को इन्चार्जके आज्ञानुसार जब डाक्टर साहब अकेले पाखाने जा रहे थे तो रामचरण पहरेदारने रोका और कहा—कि तुम्हें अकेले पाखाने नहीं जाने देंगे और कुछ अश्लील शब्दोंका भी प्रयोग किया। इसपर डाक्टर साहबने कहा—तुम्हारी इच्छा हो सो कहो, परन्तु हम जोड़ेसे पाखाने नहीं जायंगे। वह रास्ता रोके खड़ा रहा, यहां तककी जोहराकी नमाजका समय निकल गया। थोड़ी देरके बाद इन्चार्ज और सर्किल वार्डर आये। उन लोगोंके कहनेपर उसने जाने दिया, परन्तु वह गाली देता रहा। डाक्टर साहबने इन्चार्जसे कहा कि यह तुम्हारे सामने ही गाली दे रहा है और तुम चुपचाप सुन रहे हो। इसपर इन्चार्जने कहा—तुमने जेलकी आज्ञा नहीं मानी। डाक्टर साहबने कहा—तो जेलके कायदेके अनुसार ही सजा मिलनी चाहिये कि मार और गाली। इन्हीं सब बातोंको लेते हुए सम्पूर्ण असहयोगी कैदियोंने अनशन व्रत प्रारम्भ कर दिया।

इसके बाद सुपरिन्टेन्डेण्ट आये। उन्होंने किसीसे कुछ पूछा तक नहीं और कुछ आदमियोंके टिकट लेकर ३।४ आदमियों-को बेड़ीकी सजा दी। इसके बाद सुपरिन्टेन्डेन्ट डाक्टर साहबके

पास गये और उनसे पूछा। उन्होंने सब हाल कह दिया। परन्तु सुपरिन्टेन्डेन्टने उनकी सब बातें अनसुनी कर दीं और कहा कि तुमने जेलके कायदेको नहीं माना। इसलिये तुम्हें फिर क्रास-बार फिटरकी सजा दी जाती है।

हम लोग जिस समय छूटे थे, उस समय डाक्टर साहब हथकड़ी और क्रासबारकी सजामें थे। उनको सख्त तकलीफ है। आशा है कि उच्चाधिकारी इस ओर ध्यान देंगे। इसके पहले उन्होंने २२ रोजका अनशन व्रत किया था। कमजोर होनेपर भी सुपरिटेन्डेन्ट साहब उन्हें सजाके ऊपर सजा देते रहते हैं।

'मौतके पहले कब्र'

१५

रूस जापान युद्धकी जिस समय घोषणा हुई उस समय साटो जापानी पुलिसका एक मामूली आदमी था। उसने तुरत अपनेको ओसाका डिविजनमें भरती कराकर पुलिस विभागमें इस्तीफा पेश कर दिया। एक दिन घरपर आकर उसने अपने ही हाथोंसे अपनी कब्र बनाई और समस्त परिवारको भोज दे कहा—"कल मैं युद्धपर चला जाऊँगा। मेरे लौटनेकी आशा नहीं है। इसलिये मैंने अपनी मौतके पहिले ही कब्र बना ली है। जब मेरे मरनेकी खबर पाना तो इसीको मेरी कब्र जानना।" साटोकी इस बातपर लोग रोने लगे। साटोने सबको समझाया और स्त्रीको सिलाई कर एक कन्या और पुत्रकी रक्षा करनेका

आदेश किया। साटो एक मिनट भी न ठहरा और तुरत ओसाका डिविजनमें भर्ती होकर लियावहुँग रणमें जा पहुँचा। यहां साटो कई बार लड़ा, घायल हुआ, अच्छा होकर फिर लड़ाईमें गया। अन्तमें एक दिन सुरंग उड़ानेमें सुरपुर चल बसा। चलते समय उसने एक पत्र अपनी स्त्रीके नाम लिख दिया था कि "मैं नानशनके पास सुरंग उड़ाने जाता हूँ। अब बचूंगा नहीं। मेरी कुछ भी चिन्ता न करना। मेरी क़ब्र मौतके पहले ही बन चुकी है। लड़केको जवान होनेपर फौरन फौजमें भेज देना। सलाम, आखिरी सलाम।" इस पत्रको पाकर स्त्री मूर्छितसी हो गई, पर पीछे धीरज धारण कर वह स्वयं भी रेडक्रासमें भरती हो गयी।

'जीता न आऊंगा'

१६

सिक्खोंके दसवें गुरु श्रीगुरुगोविंद सिंह जीको चयकौरमें मुसलमानोंने घेर लिया। कहते हैं कि इस समय गुरु साहबको पकड़नेके लिये दस लाख फौज रवाना हुई थी। गुरुगोविंद सिंह जी भी डरने वाले व्यक्ति न थे। इस समय उनके पास पचास सिक्खोंसे अधिक साथी न थे। साथमें दोनों पुत्र अजीतसिंह और जुझारसिंह थे तथा दो पुत्र इनके पहले ही मर चुके थे। अस्तु श्रीगुरु साहबने किलेके चारो फाटकपर आठ आठ सिंह खड़े कर दिये। आप स्वयं बच्चोंको लेकर मध्यमें रहे।

जब गोली गोला छूटना आरम्भ हुआ तब गुरुसाहबने भी

खिड़कीमें बैठकर तीर छोड़ना आरम्भ किया। अन्तमें जब युद्धका बाजार गर्म हुआ तब गुरुजीने अजीतसिंहको युद्धके लिये किलेसे बाहर निकाला। वीर अजीत केसरिया बाना धारण कर गुरुके चरणोंमें सिर नवाकर युद्धके लिये चल पड़ा। जाते समय उसने कहा—पिता जी !

'मैं नामका अजीत हूं, जीता न जाऊंगा।
जीता तो खैर, हारकर जीता न आऊंगा ॥'

यह कहकर वीर घोड़ेपर सवार होकर बिजलीकी तरह शत्रुओंपर टूट पड़ा। वह जिधर झुकता उधर कुहराम मचा देता। अन्तमें देखते देखते बहादुर अजीत टुकड़े टुकड़े होकर शहीद हो गया। पिताने भी खिड़कीमेंसे "वाह वाह बेटा शाबाश" की आवाज दी पुत्रने भी कहा—"जीता तो खैर, हार-कर, जीता न आऊंगा" जो कहा था वह पूरा हुआ।

वीर बालकके साथ कुछ और सिक्ख वीर भी लड़ते लड़ते सुरपुर सिधारे। अजीत बलिहारी है तेरी वीरताको।

'मरूँगा, पर पश्चिमी गिद्धोंको उड़ाऊँगा'

१७

चीनको कमजोर पाकर यूरोपके सभी राष्ट्र अपना अपना दांव घात लगाने लगे। सभीकी यह इच्छा थी कि किस प्रकार चीनको अपने चगुलमें पावें और उसे अपने कब्जेमें करें। संयोगसे अवसर प्राप्त हुआ। चीनका नवयुवक मण्डल ईसाइयों

को अपने देशमें रहने देना नहीं चाहता था। ये ईसाई बौद्धोंके मन्दिरोंके सामने बुद्धदेवका खण्डन किया करते थे। चीनी लोगोंको भला बुरा कहा करते थे। इन नवयुवकोंकी गुप्त मण्ड-लियां थीं। इनका उत्पादक यूहीसीन नामी व्यक्ति था। इन्हें वाक्सर भी कहा करते थे। इन्हीं बाक्सरोंने विदेशी पादरियोंको चीनके बाहर निकालना चाहा। सन् १८९९ ई० में बाक्सरोंने दो तीन पादरियोंको मार डाला। पादरियोंके मरनेपर यूरोपके सारे राष्ट्र भूखे गिद्धकी तरह चीनपर अपनी अपनी सेना लेकर टूट पड़े। इस लूटमें जर्मनी सबसे आगे था। जर्मनी शांटुंगमें घुसा। रूस मञ्चूरियामें अपना झण्डा फहराने लगा। इङ्गलैण्डने यांगटसी घाटीमें अपना डेरा जमा दिया। फ्रांस भी घुस पड़ा। जापानने फ्यूकेन प्रान्तपर कब्जा कर लिया। इटली सनयेन लेनेकी इच्छा करने लगा। इस विपतकालमें चीनने बड़ी ही हिकमतसे काम निकाला। मुल्कको आफतमें देख कई वाक्सरोंने स्वयं अपना आत्मसमर्पण कर कहा यह सब दोष हमलोगोंका है। हमें फांसी चढ़ा दो पर सारे चीनको तबाह न करो। यद्यपि इस आत्म-समर्पणपर बहुत कुछ शान्ति हो गयी। पर यूरोपके गिद्ध बराबर चीनी मांसपर लड़ते रहे। वाक्सरोंको फांसी दी गई। मरते समय प्रत्येक वाक्सर कहता "मैं मरूंगा पर पश्चिमी गिद्धोंको उड़ाऊंगा" कितने ही वाक्सर मारे गये पर अपने देशके नामपर सब बलिदान होते गये। अन्तमें हरजानेके रूपमें चीनका बहुतसा अंश यूरोपके

राष्ट्रोंने दवा रखा। देखें कब परमात्मा यूरोपके राष्ट्रोंमें सद्भाव पैदा करता है।

'हाथी रेल दें'

१८

उदयपुरके राणाने मुसलमानोंसे युद्ध छेड़ दिया। युद्ध तो युद्ध, राणाके सामने सबसे विषम समस्या इस बातकी उपस्थित हुई कि 'हरावल' का पद किसको दिया जाय। सदासे शक्तावत वीर ही हरावलका पद लेते आये थे पर इसबार चुंडावतोंने भी अपना दावा पेश किया। इसबार चुण्डावत सरदार युद्धमें सबसे आगे रहनेका दावा करने लगे। इस विवादका अन्त न होते देख राणाने कहा कि अन्तलाके किलेमें जिसकी सेना पहिले घुसेगी वही हरावलका अधिकारी होगा। अस्तु, दोनों पक्षके वीर अपने अपने साथियोंके साथ चले। जाते ही युद्ध छिड़ गया। चुण्डावत वीरोंने किलेके पीछेसे आक्रमण किया और शक्तावतोंने आगेसे, चुण्डावत लोग साथमें लम्बी लम्बी सीढ़ियाँ लेते गये थे। वे शीघ्र ही किलेमे सीढ़ियाँ लगाकर किलेमें दाखिल हुए, इधर शक्तावत वीरने स्वयं कीलदार फाटक के बीच खड़े होकर पीलवानसे कहा 'हाथी रेल दे'। पीलवानने अपने मालिककी आज्ञापालन की। हाथी रेलते ही फाटक कर-कराकर फट गया। शक्तावत वीरका शरीर चलनी हो गया। वीर मर गया। पर किलेके भीतर उसका शरीर जा रहा, शक्ता-

वतोंने समझा कि बाजी मैंने मारी पर चुण्डावतोंने पहले ही सीढ़ी द्वारा अपने एक वीरको गट्ठरमें बांधकर किलेके भीतर ढकेल दिया था। यद्यपि राणाके कथनानुसार हरावलका पद चुण्डावतोंको दिया गया। पर देशके नामपर बलिदान होनेवाले शक्तावत वीर सामने हीसे किलेमें घुसकर मारकाट मचाने लगे। थोड़ी देरमें समस्त किला शक्तावतोंके हाथमें आ गया। धन्य उस शक्तावत वीरको जिसने अपना बलिदानकर किला ले लिया। इस घटनाको सुनकर राणाने भी दो बूंद आँसू गिराये। साथ ही अन्तलागढ़के फाटकपर जिस प्रकार वीर मरा था वैसी ही एक प्रतिमा बनवा दी।

'स्वीडनके नामपर मरने दे'

१९

स्वीडन और डेनमार्कमें सदासे चखाचखी चली आती थी। अस्तु सन् १५२० ई०में डेनमार्कके राजाने स्वीडनके राजाको ललकार स्वीडनपर हमला किया और उसे पदाक्रान्त करके अपना गुलाम बना लिया। इस युद्धमें स्वीडनके गस्टावारू नामी व्यक्तिने बड़ा पराक्रम दिखाया था पर अन्तमें वह परिवारके सहित कैद कर लिया गया। गस्टावारू कोपेनहेगेनके कैदखानेमें कैद किया गया और उसके माता पिताको इतनी यन्त्रणा दी गई कि वे सब मृतप्राय हो गये। अन्तमें नाना

प्रकारकी यन्त्रणा देनेपर भी जब गस्टावारूके माता पिताने गुलामी स्वीकार करनेसे इनकार कर दिया तब उनके लड़के गस्टावारूके पास खबर भेज दी गई कि अगर तुम अपने माता-पिताको बचाना चाहते हो तो उसे जाकर समझाना कि वह शत्रुओंकी गुलामी स्वीकार कर ले। गस्टावारूने भी अपने माता पिताके पास जानेसे इनकार कर दिया। उधर माता पिताने भी गस्टावारूके पास पत्र भेजा कि बेटा हम दोनोंको 'स्वीडनके नाम-पर मरने दे। तू भी कभी गुलामी न करना।' गस्टावारूको उसके माता पिताकी बात दिलमें लग गई। वह एक दिन किसी प्रकार जेलसे भागा और पर्वतोंमें जाकर अपनी यन्त्रणाकी सब कहानी कह सुनाई और अपने शरीरपरकी चोटोंकी निशाने भी दिखाई। उसकी चोट देखकर कितने ही स्वीडननिवासी उत्तेजित होकर उसके साथ लड़नेको तैयार हो गये। अन्तमें गस्टावारूने सेना तैयारकर शत्रुओंपर हमला किया और अपना देश छुड़ा लिया। अपने देशपर पुनः अधिकार करनेपर उसे मालूम हुआ कि उसके माता पिता भूखों जेलमें मार डाले गये। गस्टावारूने सिंहासनपर बैठनेके पहले अपने मृत पिताका फिरसे संस्कार कराया और उसकी कब्रपर यह लिखवा दिया कि—

'स्वीडनके नामपर मरने दे।'

——

'मैं अपनेको स्वतन्त्र समझता हूं'

२०

बड़े बड़े सीकचों और काली ऊँची दीवारोंके अन्दर भी

[यह पत्र श्रीयुत सुन्दरलालजी ने १७.७.२१ को हमें लिखा था। किन्तु यह हमें २५.७-२१ को मिला है। इसको अपनी निजी बातोंको छोड़कर हम जैसाका तैसा यहां प्रकाशित कर देते हैं।—सं० कर्मवीर।]

डिस्ट्रिक्ट जेल, खण्डवा सी०पी० १७-७-.१

वन्दे, १४ जुलाई (?) को तुम्हारा एक तार भाई माखनलाल की गिरफ्तारीके विषयमें आया था। उस दिनसे आजतक फिर आपने कोई खबर न दी कि भाई माखनलालके मुक़द्दमेमें क्या हुआ और उनका क्या हाल है। वह जहां भी रखे जावें उनका खास तौरपर खयाल रखना, कोई न कोई उनसे बराबर मिलते रहना। क्योंकि उनकी तन्दुरुस्ती बहुत खराब रहती थी। मेरी तरफसे भी सप्रेम वन्दे उन्हें कहला देना और कह देना कि जो काम शारीरिक स्वास्थ्यसे चलता है वही धैर्य्य, संकल्प (*will*) और आत्मविश्वाससे भी अच्छी तरह चल सकता है।"

मुझे मालूम हुआ है कि कुछ मित्र मेरे स्वास्थ्यके विषयमें भी चिन्तित हैं और कुछको यह भी सन्देह है कि जेलमें मेरे साथ व्यवहार अच्छा होता है वा नहीं। इसलिये आज इस पत्र द्वारा आपको अपनी ठीक ठीक हालत की सूचना दे देना

चाहता हूं।

जेलके कर्मचारियोंका व्यवहार जबलपुर, वर्धा, और यहां तीनों जगह मेरे साथ बहुत अच्छा रहा। मुझे किसीकी कोई शिकायत नहीं है। हां, स्वास्थ्य खण्डवा जेलमें अभीतक सर्वथा संतोषजनक नहीं रहा। २९ मईको मैं यहां आया था उस दिन मेरा वजन १०५ पौण्ड था। एक सप्ताह मुझसे कोई काम नहीं लिया गया। ६ जूनको मेरा वजन १०६ पौण्ड हो गया। उस दिनसे मुझे सन बटनेको दिया गया। यही काम मैं अभीतक कर रहा हूँ। एक सेर सन रोज बटना पड़ता है। काम आसान नहीं है। दिनभरकी पूरी मेहनत है। आरम्भमें उंग-लियोंमें खूब दर्द हुआ। नीले दाग पड़ गये थे। किन्तु, अब बहुत कम है। केवल बायें अंगूठेमें एक अजीब तरहकी तकलीफ होती रहती है और थोड़ा थोड़ा दर्द और उँगलियोंमें भी। फिर भी मैंने अब काम सीख लिया है। पहलेका सा कष्ट नहीं रहा। अब मैं अपना रोजका काम पूरा कर लेता हूँ। बल्कि कभी कभी कुछ अधिक भी कर लेता हूँ। वजन ६ जूनसे अबतक हर सप्ताह बराबर कुछ न कुछ कम होता जा रहा है। आज मेरा वजन पूरा १०० पौण्ड है।

आपको मालूम होगा कि मुझे हृदय-रोग (*Dialatation of the heart*) है जो कभी कभी आजकल भी कष्ट दिया करता है। इसके अतिरिक्त मैं दो बार राजयक्ष्मा (*Consumption*) का भी मरीज रह चुका हूं। एक १९१२ में और दूसरे १९१७-१८

में ऐसी हालतमें यह वजनका घटना और कमजोरीका बढ़ना कभी कभी चिन्तित जरूर कर देता है। किन्तु विशेषकर जब कि और कोई तकलीफ मुझे मालूम नहीं होती, अभीतक उचित यही समझता हूँ कि इस मामलेको मैं बिल्कुल सुपरिण्टेण्डेण्ट जेलके ऊपर छोड़ दूँ जो एक अच्छे डाक्टर भी हैं और विश्वास रखूँ कि वे जो कुछ मेरे स्वास्थ्यके लिये सर्वोत्तम समझेंगे वही करेंगे। अभीतक मैं ऐसाही कर भी रहा हूँ।

भोजनके लिये मुझे आधसेर दूध रोज और दोनों समय दाल, रोटी और चावल मिलते हैं। दोनों समय स्नान करनेकी और थोड़ा बहुत बारकसे निकल अहातेमें टहल लेनेकी भी इजाजत है। और सब तरह अच्छा हूँ।

जितने पत्र मेरे नामके जेलमें आते हैं वे दफ्तरमें जमा होते रहते हैं और महीनेमें एक बार मुझे दे दिये जाते हैं। महीनेमें एक बार ही मुझे पत्र लिखनेकी इजाजत है और एक बार ही मुलाकातकी। फुरसतके समय मुझे पुस्तकें पढ़नेकी भी इजाजत है और इस इजाजतका मैं पूरा पूरा प्रयोग करता हूँ। पाँच किताबें खतम कर चुका हूँ। कुछ अच्छी किताबें हो सकें तो भेज दीजिये। किन्तु हो बहुत अच्छी।

यह सब शरीर और मनके क्षेत्रकी बातें हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सच्ची जाग्रत आत्मापर इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वजनके घट जाने पर भी मेरा हृदय वैसा ही सत्यता, श्रद्धा और प्रेमसे भरा हुआ है और मानव कल्याणकी

वेदीपर बलिके लिये उछलना पड़ता है। जीवनकी डोरीके कट-जानेका मुझे कुछ भी भय प्रतीत नहीं होता और लोहेके बड़े सींकचों और काली ऊँची दीवारोंके अन्दर भी मैं अपनेको स्वतन्त्र समझता हूँ। मुझे अकसर यही महसूस होता है कि इन सीकचों और दीवारोंके बाहर फिरने वाले अनेक मनुष्य अपनेको आजाद समझते हुए भी वास्तवमें कैदी हैं, जिन्होंने अपनी आत्माओंको सोनेकी तथा, अन्य अनेक प्रकारकी जंजीरोंसे जकड़ रखा है और इन दीवारोंके भीतर रहते हुए भी मेरी आत्मा सच्चे अर्थोंमें आजाद है। इससे अधिक कुछ नहीं लिख सकता।

आपका भाई

सुन्दरलाल

'कोरिया, कोरिया, कोरिया'

२१

जापानका नाम यद्यपि संसार भरमें हो गया है पर उससे लोग प्रसन्न नहीं हैं। कारण कि यह यूरोपीय राष्ट्रोंके ढङ्ग और शान्तिके नामपर उन्हींकी तरह अत्याचार करने लगा है। कोरि-याका बहानाकर उसने रूससे लोहा बजाया। पर अब वह कोरियापर ही जोर-जुल्म करने लगा। सन् १९०९ ई०में कोरिया-वासियोंने जापानके प्रिसइटोको क्रोधित हो मार डाला। इसका भयंकर रूपसे बदला लिया गया। प्रिंसइटोके स्थानपर जेनरल

काउन्ट टिरौची जेनरल रेजीडेन्ट बनाये गये। इसने अकसर समाचार पत्रोंके गले घोंटे, देशभक्तोंको पकड़कर जेल भेजा। कितनोंहीको देश निकाला दिया। अब कोरिया खुले आम जापानका एक प्रान्त बना लिया गया। इतना ही नहीं पर टिरौचीके शासनकालमें बच्चे बूढ़े हण्टरोंसे पीटे गये, हजारों मना करनेपर भी बीमार रोगियोंको सिकूल ले जाया गया।

जापानके इस अत्याचारसे कोरियावासियोंका खून खौलने लगा। कितने ही कोरियन अपना देश छोड़कर मंचूरिया जानेको उद्यत हो गये। डबल्यू० सी० कुकनामी एक पादरीने लिखा है कि हर साल ७५ हजार कोरियन मंचूरिया जा बसने लगे। बिचारे कोरियन बर्फ और शीतके कारण रास्तेहीमें मर जाते थे। कितने ही बच्चे अपनी माताकी पीठपर ही भूखसे चिल्लाते-चिल्लाते मर जाते थे। समझदार बच्चे अपनी माताके चिल्लानेपर "कोरिया, कोरिया, कोरिया" कहते-कहते प्राण छोड़ देते थे। नौजवान मर्द और औरत कोरिया प्यारे कोरिया कहकर रास्तोंमें ही मर जाते थे। यद्यपि वे प्रवासमें थे पर साथ ही अपने देश कोरियाका उन्हें ध्यान रहता था और स्वदेशाभिमानमें ही अपनेको बलिदान कर देते थे। धन्य थे वे कोरियावासी वीर, जिन्होंने इस प्रकार प्राण दे दिया पर जापानका अत्याचारपूर्ण शासन कबूल न किया।

———

'मैं पहले मरहठा पीछे ईसाई हूँ'

२२

अंग्रेज भारतमें राज करते हैं तो किस प्रकार राज करते हैं इसका नजारा देखिये। वे अक्सर कहते हैं कि पुराने जमानेमें हिन्दुस्थानमें एक राजा या बादशाह ही सब कुछ कर सकता था। न्याय उसकी मरजीपर था। पर अंग्रेजी राजमें सारा काम कौंसिलों द्वारा होता है। अर्थात यद्यपि अंग्रेज राजा हैं पर उन्होंने हिन्दुस्थानियोंको कौंसिल दे रखा है जिससे हिन्दोस्थानी ही सब कामोंके जिम्मेदार हैं। वे ही प्रस्ताव पास करते हैं और उसी प्रकार नियमादि बना कर देशका शासन होता है।

कौंसिलोंमें अक्सर जी-हुजूरवाले ही जाते हैं; क्योंकि अंग्रेज सरकार इनको अपनी ओर मिलाकर सारा काम अपने मनके मुताबिक करती है और ऊपरसे दिखानेके लिये कहती है कि हम क्या करें, कौंसिलोंमें तुम्हारे भेजे हुए हिन्दुस्थानी ही भाई तो हैं।

पर अब जबसे महात्मा गान्धीने अपने सदुपदेशों द्वारा देशकी आंख खोल दी, तबसे प्रजा भी सरकारकी सब चालाकियाँ जान गयी। अब वह भी अपने आदमियोंको भेजनेके लिये आन्दोलन करने लगी। अब जब स्वदेशभक्त कौंसिलमें जाने लगे, तब सरकारको बेचैनी हुई,लाख बेचैनीपर भी देशके अनेक स्वदेश भक्त नेता कौन्सिलमें पहुँच गये। इनमेंसे कितनों हीको

सरकारने छांट दिया। मजदूरदलके नेता मि० वैपरिस्टाका नाम भी मरहठा लिस्टमेंसे निकाल दिया गया। इसपर १० मार्चके विश्वमित्र पत्रमे यों निकला था कि—

चुनाव सम्बन्धी झगड़ेका फैसला करनेके लिये जो अदालत बनी हुई है उसके सामने बयान करते मि० वैपरिस्टाने कहा कि मैं भी मरहठा हूँ और चुनावके अफसरको कोई अधिकार नहीं था कि वे मेरा नाम मरहठोंके स्थानपरसे निकाल दें। मेरे पूर्वज मरहठा थे और मैं भी मरहठा ही कहलाना पसन्द करता हूँ।

"मुझे सज़ा मंजूर है"

२३

जैतोकी गोलाबारीका विस्तृत विवरण

शहीदी जत्था जो अहिंसाकी प्रतिज्ञाकर गत वसन्तपञ्चमीको अमृतसरमे रवाना हुआ था पूर्व सूचनाके अनुसार नानकाना साहबकी हत्याके दिवस २१ फरवरीको जैतो पहुँचा। बर्गारीसे १२ बजे दिनसे मृत्यु, अत्याचार और यातनाओंकी नितान्त भी परवा न करते हुए उन लोगोंने अपनी यात्रा आरम्भ की। ढाई बजे दिनको ये लोग फरीदकोट और नाभा रियासतोंकी सीमापर पहुँचे और वहाँपर इन लोगोंको डाक्टर किचलु,

अध्यापक गिडवानी और श्री जिमन्द मोटरपर बैठे हुए मिले, क्योंकि नाभा राज्यके अधिकारी उनको उस 'पवित्र भूमि' में प्रवेश करनेसे रोके हुए थे। इन लोगोंको मोटरपर बैठा हुआ छोड़कर जत्था आगे बढ़ा और इसके पीछे पीछे १०-१५ हजार आदमियोंका झुण्ड 'सत् श्री अकाल' और 'वाह गुरुजी' के गगनभेदी शब्द करता हुआ जा रहा था। सैनिक और पुलिसके सिपाही जोकि तमाम रास्तेमें ४० गजकी दूरीपर तैनात थे, जत्थे पर व्यंगवाण छोड़ते आते थे। लेकिन इसकी परवा न करते हुए जत्था उस स्थानपर बढ़ता गया जहाँ कि "गुरुके शब्द" का अपमान हो रहा था। चार बजते ही जत्था गंगमर गुरुद्वारेके सामने पहुंच गया जो कि पैदल और घुड़सवार सैनिकोंके नर-मुण्डोंसे घिरा हुआ था। नाभाराज्यके शासक श्री जान्स्टन वहांपर आये और जत्थेसे पीछे हटनेको कहा। जत्थेकी ओरसे जवाब मिला कि जबतक वे अखण्ड पथ समाप्त नहीं कर लेते तबतक वे पीछे नहीं हटेंगे। तीन बार श्री जान्स्टनने यह आज्ञा दी और तीनों बार यही जवाब मिला, इसके बाद श्री जान्स्टन सुरक्षित स्थानपर चले गये उन्होंने हाथ उठाकर गोली छोड़नेके लिये इशारा किया, किलेसे गोली दगनेकी एक आवाज हुई, दूसरी आवाज हुई और इसके बाद हजारों आवाजें।

जनता हिम्मत न हारी और एक इञ्च भी पीछे न हटी। इसके बाद थोड़ी देरके लिये सन्नाटा छा गया। इसके बाद मशीन गनें चलने लगीं। दो मिनट तक गोलियां चलती रहीं,

मनुष्यके बाद मनुष्य गिरने लगे, जत्था अविचल रहा। कुछ घायल दर्शक नजदीकके अपने गांवोंमें भागने लगे। पर लड़-खड़ाकर गिर गये। वहांका सारा रास्ता खूनसे भर गया। घायल लोगोंका किसीने देशी तरीकेसे सेवा शुश्रूषा करनी चाही उसीपर डण्डेकी मार पड़ने लगी। राजके सैनिक अनेक घायलोंको उठाकर अपने किलेमें ले गये। जिसमें कि मृत और घायलोंकी अधिक संख्या न मालूम हो। घोड़ोंसे पीछाकर लोगोंको तितर बितर किया गया। जत्था अपने घायल साथियोंको उठाकर अविचल भावसे आगे बढ़ा। घायलोंकी सेवा और शुश्रूषाके कार्यके लिये डाक्टर केहरसिंह तैनात थे, वे गिरफ्तार कर लिये गये और पत्र प्रतिनिधि श्री महमद अमीन्स भी गिरफ्तार किये गये। रसद और दवादारूकी गाड़ियां जब्त कर ली गयीं। डाक्टर किचलू और अध्यापक गिडवानी अभीतक फरीदकोट और नाभाकी सीमापर ही रुके हुए थे। परन्तु गोली चलनेकी आवाज सुनते ही वे आज्ञाका उलंघनकर आगे बढ़ गये तथा वहाँ पहुँचे और फिर ये दोनों भी गिरफ्तार कर लिये गये।

धन्य है इन दो वीरोंको जो भविष्यके भयंकर दुःखोंका न ख्यालकर नाभा-राजकी आज्ञाको साफ तौरपर उल्लघन कर आगे बढ़े और उनके हाथ अपनेको समर्पण कर दिया। इन्हे पीछे ढाई ढाई वर्षकी सजा हुई। जिसे सुनकर उन्होंने कहा "मुझे सजा मजूर है" इनके साथमें गया हुआ अमरीकन जेगडे वलके डरके मारे वापस गया भारतके गुलाम होनेपर भी स्वतन्त्र

देशोंकी अपेक्षा अधिक हिम्मत रखता है।

आज २६ फरवरी
१९२४ ई०

'दूकानें न खुलेंगी चाहे सर्वस्व नष्ट हो जाय'

२४

जालियानवाला बागमें हत्या हो जानेके कारण अमृतसरमें सर्वत्र हड़ताल मनायी गयी। यह हड़ताल सरकारी अफसरोंको पसन्द न आयी। १४ अप्रैलको कोतवालीके सामने सभाकी गयी जिसमें कमिश्नर महोदयने कहा—"तुम लोग युद्ध चाहते हो या शान्ति। सरकार दोनोंके लिये तैयार है। उसने जर्मनीको भी नीचा दिखाया है। नगर जेनरल डायरके अधिकारमें दे दिया गया है।" कमिश्नरके बाद ही डायरने कहा—"मैं सिपाही आदमी हूँ, मुझे स्पष्ट शब्दोंमें कहो तुम युद्ध चाहते हो या शान्ति। युद्ध चाहते हो तो अखाड़ेमें उतर आओ। सरकार उसके लिये तैयार है। शान्ति चाहते हो तो हमारी आज्ञा मानकर दूकानें खोलो। यदि तुम दूकानें नहीं खोलोगे तो गोली मार दूंगा, मैं फौजी आदमी हूँ। मेरे लिये फ्रांसका रणक्षेत्र और अमृतसर एकसा है। तुम सरकारके विरुद्ध बकवाद करते हो। जर्मनी और बंगालमें शिक्षा पाये लोग राजद्रोह करते हैं। मैं उन सबको मजा चखाऊंगा। मैं सिखों और अन्य भारतीयोंसे अच्छी

तरह परिचित हूं।"

इतनी बातपर सभामें स्थित तथा अन्य लोग परस्पर बात-चीत करने लगे। लोगोंमें बात बढ़ गयी। जी हुजूर वाला दल दूकान खोलनेके पक्षमें था पर ये दालमें नमकके समान थे। सभामें शोर-गुल देख डायरने फिर कहा—यदि तुम आप-अपनी खुशीसे दुकानें न खोलोगे तो मैं बन्दूकोंके कुंदों और डण्डेके बल खुलवाऊंगा।" मिस्टर इरविंगने कहा—"अंग्रेजोंकी हत्याकर तुमने बड़ा भारी अपराध किया उसके लिये तुमसे और तुम्हारे बच्चोंसे बदला लिया जायगा।" सब कुछ कहनेपर जनता यह चिल्लाकर चलती हुई "दूकानें न खुलेंगी चाहे सर्वस्व नष्ट हो जाय।"

"हम जहाजके साथ डूब मरेंगे पर कैदी न बनेंगे"

२५

एक दिन सवेरे पुर्तगाली सेनापति सोद्रो अपने जहाजके साथ सैर-सपाटा कर रहा था कि सहसा उसे कालीकटके राजाका जहाज दिखाई पड़ा। कालीकट वालोंने यह समझकर कि फिरंगियोंका जहाज है उनके स्वागतार्थ एक तोप छोड़ा। फिरंगियोंने यह समझकर कि वे हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहते हैं एक गोला ऐसा ताककर मारा कि कालीकट राज्यके जहाजका

मस्तूल टूट गया। जमोरिनकी पताका समुद्रमें बहने लगी। जमोरिनके साथी खोजा कासिमने अपने मित्रकी सहायताके लिये पुर्तगाल वालोंपर आक्रमण किया। अब तो जमोरिनके कप्तान कोजम्बर और कासिममें पुर्तगाल वालोंकी भिड़न्त हो गई। फिरंगी निशानेबाज थे इसलिये वे विजयी हुए।

एक अंग्रेज इतिहासकारका कहना है कि विजयी सोद्रीने जहाजोंको लूटकर उसपरके सामान हथिया लिये और कई एक सुन्दर औरतोंको लेकर प्रसन्न मनसे प्रस्थान किया। कितने ही मूर लोगोंकी स्त्रियां तथा पुत्र इत्यादि छीन लिये गये। इतना ही नहीं, भागनेवाले मूरोंके जहाजपर आक्रमण किया गया। मूरोंने कहा—"हम जहाजोंके साथ डूब मरेंगे पर कैदी न बनेंगे।" यह कहते हुए वे अपने जहाजोंमें आग लगाते हुए कूद पड़े। साथ ही फिरंगियोंने बाढ़े दागीं। कितने ही जहाज जलने लगे, कितने ही डूब गये। बड़ी बुरी हालत हुई, पर इस बुरी हालतमें भी मूरवीर तथा कालीकटके सिपाही कितनेही डूब मरे पर अधीनता स्वीकार न की। अपने राज-सिंहासनपरसे जमोरिनने देखा कि फिरंगियोंके साथ उपकार करनेका बदला उन्हें गोली और बन्दूकोंसे मिल रहा है।

'बुढ़ियाका झण्डा'

२६

संसारके प्रत्येक राष्ट्रोंका झंडा है पर चूंकि भारतवर्ष एक गुलाम देश है इसलिये यहांके स्वतन्त्र राज्योंकी भी हैसियत गुलाम राजाओंकी तरह है। हमारे देशी राज्योंके झण्डोंकी कहीं गिनती नहीं है। भारतवर्षको झण्डेकी जरूरत पड़ी पर वह अपना झण्डा कैसा बनावे। फिर यदि झण्डा बन भी जाय तो उसके लिये हिन्दू मुसलमान उसी प्रकार कटने मरनेको तैयार हो जायंगे जैसे एक जर्मन अपने जर्मन झण्डेके लिये मरता है। एक अंग्रेज अपने यूनियन जैकके वास्ते मरता है।

गुलामीकी जंजीरमें जकड़े हुए भारतको झण्डेका उपदेश देना कोई आसान काम नहीं, फिर भी महात्मा गांधीने भारतको एक झण्डा दिया, झंडेमें तीन रंग हैं। लाल हिन्दुओंका, हरा मुसलमानोंका, सफेदमें अन्य कौमें जो भारतमें आकर बसी हैं। इसी तीन रंगे झण्डेको लेकर नागपुरके कांग्रेस वालंटियर आगे बढ़े। अंग्रेज सरकारको यह बुरा लगा। अस्तु उसने आज्ञा जारी किया कि जो कोई भी कांग्रेसका झंडा लेकर चलेगा उसका चालान किया जायगा। इस एलानपर कांग्रेसके वालंटियर दल के दल झण्डा लेकर चले। इन्हीं स्वयं सेवकोंके बीचमें एक अति वृद्ध बुढ़िया भी झण्डा लिये थी।

बुढ़ियाके झण्डेके साथ बड़ी भीड़ चली। वह लोगोंसे यही

कहती थी कि यह बुढ़ियाका झण्डा है। मुझ बुढ़ियाका नहीं, वरन् भारत माताका, आओ मेरे साथ जेल चलो पर झण्डा न छोड़ो। सब स्वयंसेवकोंके साथ बुढ़िया भी गिरफ्तार कर ली गई। जब पुलीस झण्डा छीनने लगी तो बुढ़ियाने कहा—"क्या एक बुढ़िया का झंडा छीनना है किसी जबरदस्त जवानका झंडा छीन लो तो मालूम हो।" लोग इसपर करतल ध्वनि करने लगे।

'यह और भी अच्छा होगा'

२७

वन्देमातरम्में मैनचेस्टर गार्जियनके सम्वाददाताने लिखा है कि—'जगलुलपाशा अपने चन्द साथियोंके साथ यहां पहुँचे। फ्रांसीसी विश्वविद्यालयके चन्द मिश्री विद्यार्थी और सीरियाके नुमाइंदोंमें एक स्पेशल लांचपर सवार होकर बन्दरगाहसे दूर जाकर उनका आगत-स्वागत किया। जब जहाज बन्दरगाहपर पहुँचा तो उस समयका नजारा ही और था। मिश्री लोगोंने 'जगलुलपाशाकी जय'के नारे लगाये। इसपर अंग्रेज मुसाफिरोंने इन नारोंका अर्थ कुछ और समझा। वे इकट्ठे होकर अपना राष्ट्रीयगीत गाने लगे। बरमिंघमके एक महाशयने मिश्रमें बृटिश राजकी तारीफ करनी आरम्भ की और मिश्री लोगोंको नाशुक्र-गुजार करना आरम्भ किया। इसका खंडन मिस्टर फानूसने किया कि मिश्री नाशुक्रगुजार नहीं हैं। मिश्री लोगोंकी इच्छा

अंग्रेजोंके कतल करनेकी नहीं है। बल्कि वे आजादीके लिये लड़ रहे हैं। कई एक अंग्रेजोंको मिस्टर फानूसकी बात पसन्द आई।'

एक दिन चाय पानीके समय जगलूलपाशाने स्वयं कहा—"हम वास्तविक स्वतंत्रताके आधारपर हमेशा अंग्रेजोंसे दोस्ती करनेको तैयार हैं। वे शीघ्र ही मिश्रमें पहुँचने वाले हैं।" सुना जाता है कि इसी समय किसीने यह भी आवाज दी कि तुम लोग भी जगलूलपाशाकी तरह निकाले जाओगे। विद्यार्थियोंने हंसते हुए कहा—इसमें हम लोग अपनी खुशनसीबी समझेंगे। यह कहते हुए विद्यार्थियोंने फिर अपना गाना आरम्भ किया। किसीने फिर आवाजदी तुम्हारा लांच डूबो दिया जायगा। इसपर जवाब दिया गया। यह और भी अच्छा होगा। सचमुच वर्तमान मिश्र पचास वर्ष पहिलेका मिश्र नहीं है।

'मैं सबके आगे रहूंगा'

२८

एक दिन पृथ्वीराज चौहानकी सभा लगी हुई थी कि सहसा एक १२ वर्षसे भी छोटा लड़का आकर खड़ा हो गया। उसने भरी सभामें कहा-आजकी लड़ाईमें मैं सबसे आगे रहूँगा। बालककी इस वीरोक्तिसे सभा अवाकसी रह गयी। फिर राजा और बालकमें यों बातें होने लगीं—

राजा—क्यों बेटा, तू इतना घबराया हुआ क्यों है ?

बालक—एक क्षत्रियका लड़का विपद्‌कालमें घबराना नहीं जानता।

राजा—तुम्हारा मतलब क्या है ?

बालक—मेरा मतलब यही है कि कल कुछ लोगोंने मुझे ताना मारकर कहा कि तेरा बाप तो लड़ाईसे भागा था। मैं यह सुन नहीं सकता। अस्तु, आज मुझे आज्ञा हो कि मैं सबके आगे युद्धमें रहकर अपने पिताकी कलंक-कालिमा मिटाऊं।

राजा—बेटा तेरा नाम ?

बालक—राजन्, मेरा नाम लगरी राय है।

राजा—पिताका नाम ?

बालक—पिताका नाम समन्तराय राठौर।

राजा—बालक, तू धीरज धर, तेरे पिताने आल्हा ऊदलसे लड़ते समय मेरी जान बचायी है। मैं और तुम्हारे पिता एकही स्थानपर घायल अवस्थामें पड़े थे। यदि थोड़ी देरमें और सैनिक मुझे ढूढ़ते ढूढ़ते न आ जाते तो गिद्ध और कौवे मुझीको चटकर जाते। तुम्हारे पिताने अपनी जांघमेंसे मांस काट काटकर गिद्धों-को खिलाया है पर मुझे बचा लिया। तुम्हारा पिता मेरेही कारण मर गया।

बालक—राजन्, परमात्माको धन्यवाद है कि उसने मुझे भारी कलंकसे बचाया।

———

'फिरंगियोंका पत्थर गिरा दो'

२९

भारतके दक्खिनमें जमोरिन ही सर्व प्रधान राजा थे। पर पुर्तगाल वालोंने अपना प्रभुत्व जमानेके लिये कोचीन राजको भी पीठ ठोककर खड़ा किया कि तुम जमोरिनसे लड़ जावो। मूर्ख-कोचीनराज जमोरिनसे भिड़ पड़ा और बड़े बेतरह पराजित हुआ। फिरंगी भी वहांसे खदेड़ दिये गये। कुछ दिनोंके बाद और कई सेना लाकर फिरंगियोंने फिर आक्रमणकर जमोरिन को पराजित किया। कोचीन राजके राजाको अपने चंगुलमें पाकर पुर्तगालवालोंने एक सुदृढ़ किला बनवाना चाहा। कोचीनके राजाने मंजूरी दे दी। पत्थर गिरने लगे। कारीगर भी पुर्तगालसे आगये और यहांके कारीगरोंकी सहायतासे एक सुदृढ़ किला तैयार हुआ, इसके किलेके बारेमें "भारतमें पुर्तगाल" नामी ग्रंथमें लिखा है -"राजाकी सहायतासे कोचीनमें फिरंगियोंका पहिला पत्थरका किला तैयार हो गया। भारतमें पुर्तगालवालोंके अधि-कार जमानेकी उस प्रथम सीढ़ीको फिरंगी लोग बड़ी आशाकी दृष्टिसे देखने लगे।

कहा जाता है कि इस पत्थरके किलेको एक नायर सरदार देख न सका। उसने अपने ६००० वीरोंके संग आक्रमण किया। मार काट हुई। अन्तमें किलेका बहुत सा हिस्सा खराब हो गया। फिरंगी भागे पर इसी समय अलबुकर्ककी नई सेना पहुंच

गयी। नायरोंने फिर भी युद्ध जारी रखा और यह कहते हुए प्रत्येक नायर गिरता जाता था कि "फिरंगियोंका पत्थर गिरा-दो" लड़ते लड़ते छः हजार नायर स्वदेशाभिमानमें बलिवेदी-पर चढ़ गये। कहते हैं कि इन वीरोंके रक्तसे हफ्तों समुद्रका रंग लाल लाल रहा।

'नियाज सुबराफ मैं तुझे कैसे बचाऊं'

३०

रूसी बालटिक बेड़ेके प्रधान श्रीमान एडमिरल रोजडेस्क वेस्की थे। ये जिस जहाजपर सवार थे उस जहाजका नाम नियाज सुबराफ था। यह जहाज भी जापानी एडमिरल टोगोकी गोला बारीसे आहत होकर भागा। भागते भागते इसकी दशा इतनी शोचनीय हो गयी कि रूसी एडमिलर रोजस्कडेवेस्की "बुहनों" नामी ध्वंसी जहाजपर भागे। उन्होंने अपने जहाज को अरक्षित अवस्थामें छोड़कर अपनेको बचाया। इधर कुछ सिपाहियोंने "नियाज" को न छोड़ा। उन्होंने लड़नेकी ठानी।

कुछदेर बाद प्लोरो महोदयने कप्तान हिरोजको भेजा कि वह नियाज सुबराफको डुबो दें। कप्तान हिरोज आये पर इनका क्रिया कुछ न हुआ। एक तो समुद्रकी तरंगोंसे वे व्यथित हुए दूसरे नियाज सुबराफ यद्यपि आहत अवस्थामें था पर फिर भी

उसपरके वीरोंने गोला बरसाना बराबर जारी रखा क्प्तान हिरोज वापस गये।

"सन्ध्या सात बजेके करीब एक और जंगी बेड़ा आया। इस बेड़ेमेंसे "मुरासमी" नामी जहाज आगे बढ़ा। इसने जातेही १८ इंचका एक तारपेड़ो चलाया। इस तारपेड़ोकी मारसे नियाजमें बड़ाभारी छेद हो गया। पानी जोरोंसे भरने लगा। इस समय भी कितने ही रूसी सैनिकोंने लेटकर नियाजको बचाना चाहा पर नियाज न बचा, वह पानीमें डूबने लगा। जब उसके बचनेकी बिलकुल आशा जाती रही तब रूसी सैनिकोंने रोकर कहा—"नियाज मुबराफ मैं तुझे कैसे बचाऊं" यह कहते हुए समस्त रूसी सैनिक अपने जहाजके साथ डूब मरे। ये सैनिक आखिरी समय तक तोप और बन्दूक चलाते रहे। अन्तमें डूब जानेपर मुरासिमीने खबर दी—"नियाजमुबराफ डूब गया।"

"परमात्मा, मुझे यीशुमसीह व मुहम्मदशाहकी तरह तकलीफ बरदाश्त करनेकी ताकत दे"

३१

स्वामी गोविन्दानन्द एम० ए० करांचीमें कांग्रेस आन्दोलनके नेता थे और दत्तचित्त होकर कांग्रेसका कार्य्य कर रहे थे। करांचीमें आपने एक वेदान्त आश्रम स्थापित किया था। जिस समय आप डी० जे० कालेज सिन्धके विद्यार्थी थे उसी

समय आपको कालेजके स्वेच्छाचारी प्रिंसपलके कार्य्यका प्रतिवाद करना पड़ा था, जिसका परिणाम यह हुआ कि कालेज कमिटीने प्रिंसपलको कालेजसे हटा दिया। इतिहासमें एम० ए० की डिग्री प्राप्त करके आप फर्गु सन कालेज, मुजफ्फरपुर, नागपुर, तथा बांकीपुरके कालेजोंके अध्यापक रहे। किन्तु आपका मन इस काममें नहीं लगा। आपकी प्रवृत्ति राजनीति और वेदान्तकी ओर थी। आप स्वामी विवेकानन्दके चरणोंका अनुसरण करना चाहते थे। महासमरके पहले आप जापान होकर अमेरिका जाना चाहते थे। जापानमें आपको अमेरिकाका पास पोर्ट नहीं मिला और सिन्ध प्रवासियोंके साथ आपको कोमागातामारू जहाज पर भारत लौट आना पड़ा। कोमागातामारूकी घटना सन् १९१४ सालके इतिहासमें रक्ताक्षरोंसे लिखी हुई है। आप सन् १९१४ में नजरबन्द किये गये और आपके साथ निष्ठुर व्यवहार किया गया। अलीपुर जेलसे आपको यरवदा जेल पूनामें भेज दिया गया और वहां आपको ८ एप्रिल सन् १९१८ तक एकान्तवासका दण्ड भोगना पड़ा। उसके बाद आप छोड़ दिये गये। स्वामीजीने लगभग एक वर्ष ध्यान और धार्मिक अभ्यासोंमें व्यतीत किया। आप सन् १९१९ के सत्याग्रह दिवसके अवसरपर देशके कामके लिये कटिबद्ध हुए। उस समय सिंधके कमिश्नरने आपको अनेक प्रकारसे तङ्ग किया था। आपके आश्रमकी तलाशी की गयी और आप पर मिथ्या अभियोग लगाये गये। किन्तु अन्तमें कमिश्नरको लाचार होकर उन

अभियोगोंको वापस ले लेना पड़ा। सन् १९१९ में आप विशेषतया बम्बईमें वेदान्तपर भाषण देते रहे। उसी वर्षके वसन्त ऋतुमें आपने लोकमान्य तिलकका सिंधःभ्रमणमें साथ दिया था। लोकमान्यकी सलाहसे स्वामीजीने अपनी जन्मभूमि सिंधमें कार्य्य करना निश्चय कर लिया और कराचीमें प्रधान केन्द्र स्थापित किया। आप दो महीने भी कराचीमें नहीं रहे थे कि आपको एन० डबल्यू० रेलवेकी हड़तालका सञ्चालन करना पड़ा। रेलवेके अधिकारियोंने स्वामीजीपर अनधिकार प्रवेशका अभियोग लगाकर नालिश कर दी, उस मामलेमें स्वामीजीको दश रुपये जुर्माना हुआ और आपने उसे देनेसे इन्कार किया। किन्तु आपके वकीलोंने जुर्माना दाखिल कर दिया। आपने कमिश्नरके यहां अपील की कि बिना मेरी सम्मतिके मजिस्ट्रेटको जुर्माना लेनेका कोई अधिकार नहीं था। किन्तु इसी समय असहयोगकी घोषणा हुई और उसके सिद्धान्तानुसार आपने अपनी अपील वापस ले ली। कलकत्ता कांग्रेसके समयसे अब ६ महीनेमें आपने ६ वर्षका काम किया है। आपके उपदेशसे कराचीका डी० जे० कालेज आधा खाली हो गया और वहाँके लगभग ५० विद्यार्थी सिन्धके देहातोंमें काम कर रहे हैं। जिस समय आप पकड़े गये थे, आप तिलक-स्वराज्य फण्डके लिये चन्दा एकत्र कर रहे थे। राजनीतिसे बढ़कर आपका प्रिय विषय वेदान्त है। राजनीतिमें आपने इसीलिये भाग लिया था कि एक पराधीन और पतित जातिका धार्म्मिक सन्देश संसार प्रसन्नतापूर्वक

ग्रहण नहीं कर सकता। अङ्गरेज जातिसे आपकी शत्रुता नहीं है। आपका झगड़ा अधिकारिवर्गके साथ है। नौकरशाहीसे दान स्वरूप स्वराज्य नहीं लेकर उसे अपने बाहुबलसे प्राप्त करना चाहते हैं। आप बराबर कहा करते थे कि पृथ्वी ईश्वरके सभी प्राणियोंके लिये है अतएव भारतसे अङ्गरेजोंका निकालना उसी प्रकार असम्भव है जिस प्रकार मुसलमानोंका। आपका कहना था कि यदि मुझे शक्ति भी होती तो मैं अङ्गरेजोंको भारतसे नहीं निकालता; कारण कि अंगरेजोंके चले जानेसे संसारको वेदान्ती बनानेका भारतका भविष्य उद्देश्य नष्ट हो जायगा। आप दो सिन्धी मासिक पत्रोंका सम्पादन किया करते थे। गत २१ मार्चको बम्बईके गवर्नर सर लायड जार्जके आगमनके उपलक्ष्यमें आपने करांचीमें हड़ताल करायी थी। इसके एक पक्षके बाद ही आप पर १२४ ए० और १५३ ए० धाराओंका प्रयोग किया गया। इस समय आप जेलमें हैं, आपका मामला चल रहा है। (पत्रिकासे सङ्कलित)

लाहौरका प्रताप लिखता है कि स्वामीजीने बड़ी ही वीरतासे कालेपानीका हुक्म सुना। जजकी इच्छा थी कि स्वामीजी इस बातका वादा करें कि वे मुल्की मामलोंमें आगे कोई भाग न लेंगे। लेकिन स्वामीजीने ऐसा करनेसे साफ इन्कार कर दिया और कहा कि मैं कांग्रेसके हुक्मकी तामील करूँगा। जब अदालतने उन्हें हुक्म सुनाया तो उन्होंने मुसुकराते हुए कहा—परमात्मा मुझे यीशूमसीह और

मुहम्मदशाहकी तरह तकलीफ बरदाश्त करनेकी हिम्मत व ताकत अता करे। आपने अपना संदेश यों दिया कि अब मुझे ईश्वर पर छोड़ दो। अब मैं प्रचारके जरिये नहीं बल्कि प्रार्थनाके जरिये स्वराज्यके लिये प्रार्थना करूँगा। आप लोग बराबर शान्तिमय असहयोग जारी रखें। (प्रताप-लाहौर)

'मौतके मार्गपर'

३२

इंगलैंडके राजा तीसरे एडवर्डके जमानेमें इंगलैंड और फ्रांसमें सांप नेवलेकासा बैर था। दोनों एक दूसरेके जानी-दुश्मन थे। कई बार इंगलैंड हारा कई बार फ्रांस हारा। अन्तमें तीसरे एडवर्डने पूरी तैयारीके साथ फ्रांसपर चढ़ाई की और उसकी जमीनपर अपनी सेना उतार दी। कई स्थल-युद्धोंके बाद फ्रांसीसी हार गये। विवश हो फ्रांसीसियोंको कैलेके किलेमें शरण लेनी पड़ी। अंग्रेजोंने किलेके बाहर घेरा डाल दिया और ऐसा प्रबन्ध किया कि एक चिड़िया भी निगाह बचाकर किलेके भीतर न जा सकती थी। किलेके भीतर घिरे हुए फ्रांसीसियोंको अन्न-पानी बिना बड़ा कष्ट होने लगा। अन्तमें कई वर्षोंके घेरेके बाद फ्रांसीसियोंने आत्म-समर्पणकर देनेका विचार किया।

उन्होंने आत्म-समर्पण करनेका यह तरीका निकाला कि दांतमें तिनका धरकर हमलोग निकल चलें। सम्भव है कि अंग्रेज दयाके वश हो जान लेकर निकल जाने दें। यह सन्देश जब

अंग्रेजोंके यहां पहुँचाया गया तब उन लोगोंने साफ इनकार कर दिया कि हम एक भी फ्रांसीसीको बचकर न निकल जाने देंगे। अस्तु, तीसरे एडवर्डने यह तय किया कि सब सेना कुशलपूर्वक निकल जाने पर छः आदमी अंग्रेजोंके सुपुर्दकर दिये जायँ। उनके संग वे जो चाहें बर्ताव करें। फ्रांसीसियोंने इन शर्तोंको मान लिया और तुरन्त एक सभाकर पूछा कि कौन अपनी जान देनेके लिये तैयार है। पहिले तो कोई नहीं बोला, फिर पीछेसे पादरीने स्वयं अपनेको अगुआ बनाया। बाद उसके उसका लड़का भी प्राण देनेको तैयार हो गया। इसके पीछे ४ और सज्जनोंने भी अपनेको पेश किया। इस प्रकार छः आदमी तीसरे एडवर्डके पास गये। इन छः व्यक्तियोंका मरना जरूरी था। अस्तु, जब ये सामने गये तब एडवर्डकी धर्मपत्नीको दया आ गई और उसकी प्रार्थनापर सब छोड़ दिये गये। फ्रांसीसियोंने छः व्यक्तियोंको बड़ी ही प्रतिष्ठासे किलेके भीतर ले लिया। कैलेके सामनेसे अंग्रेजी घेरा उठा लिया गया और सब फ्रांसीसी इन छः वीर पुरुषोंके आत्मोत्सर्गसे बच गये।

— —

"बोरडीनो प्यारे बोरडीनो"

३२

जापानी गोलोंकी मारसे रूसी जहाज "बोरडीनों" में आग लग गयी, वह एकाएक खड़ा हो गया। इस जहाजपर अन्य जहाजोंके लिये बहुत कुछ युद्धकी सामग्री थी। जापानियोंने तार द्वारा सूचना दिया अगर तुम आत्म-समर्पण करो तो हम आकर तुम्हें सहायता दें। बोरडीनोंने उत्तर दिया "हमें सहायता-की जरूरत नहीं है।"

बोरडिनोंमें धीरे धीरे अग्नि प्रबलहो रही थी। ऊपरसे अग्नि बढ़ रही थी और नीचेसे पेंदेमें छिद्र हो जानेके कारण पानी जोरोंसे भर रहा था। बड़ी बुरा हालत थी। सैनिक बढ़ती अग्निके भयसे कभी नीचे जाते थे पर पानी भरता हुआ देखकर वे फिर डेकके ऊपर आजाते थे। अग्निकी लवर इतने जोरोंपर बढ़ रही थी कि सैनिक उस प्रचंड अग्निकी गरम ज्वालाको सहन नहीं कर सकते थे।

जापानियोंका कहना था कि कितने ही रूसी सिपाही अधिक परिश्रम और अग्निके कारण पागल हो गये। आगसे बचनेके लिये कितनेही पानीमें कूद पड़े। जो कूदे सो मर गये। जो नहीं कूदे वे जल भुनकर मर गये। धुआँ बढ़ता गया। अन्तमें एक धड़ाका हुआ। सुना जाता है कि कितने ही सैनिकोंने जब जान लिया कि अब बोरडिनोका बचना कठिन है तब

उन्होंने मेगजीनमें आग लगा दी। धड़ाकेके साथ साथ धुआं भी प्रचंड हुआ पर जब धुआं कम हुआ तब बोरडिनोंका लाल लाल रंग दिखाई पड़ा।

"बोरडिनोकी मेगजीन उड़ गयी। बोरडिनो स्वयं उड़ गया पर उसने अपनी युद्ध सामग्री शत्रुओंके हाथ न जाने दिया। धड़ाकेके समय सब सैनिकोंने यही कहा कि—"बोरडिनो प्यारे बोरडिनो।"

'कुन्दों और किरचोंकी मार फूलोंकी वर्षा है'

३४

वन्देमातरम्में उसके सम्वाददाताने लिखा है कि—"अटक जेलसे करीब चार सौ कैदी रिहा हुए। उन्हें सीधे अमृतसरका टिकट दिया गया। मार्गमें सिखोंका मशहूर तीर्थ पंजे साहिबका पड़ता है, इसलिये उन्होंने हसन इब्दाल स्टेशनपर उतरना चाहा। उनकी इच्छा दरशन परसन करके फिर अमृतसर जानेकी थी। लेकिन हसन और अमृतसरके बीचका फासला सौ मीलसे कम है; इसलिये स्टेशन मास्टरने उन्हें उतरनेसे रोका पर वे न माने और उतर ही पड़े। इस बातकी खबर टेलीफोन द्वारा रावल पिंडी दी गई। जब वे अगली गाड़ीसे रावल पिंडी पहुंचे तो टिकट कलक्टरोंने टिकट मांगे। पहिले इन लोगोंने अमृतसरवाले टिकट दिखाये जो अफसरोंकी ओरसे दिये गये थे। जब टिकट कलक्टरोंने कहा कि अमृतसर वाले टिकटोंकी मीयाद हो चुकी

तब उन लोगोंने हसन इब्दाल वाले स्टेशनके टिकट दिखाये। इसपर रेलवे अफसर और अकालियोंके बीच कहा सुनी होने लगी। अकालियोंने यह भी कहा कि अगर यह हमारी गलती होगी तो हमलोग अमृतसर जाकर टिकट देंगे।

इधर तो बात-चीत हो रही थी और उधर कुछ अकाली गाड़ीपर सवार होनेके लिये चले, पर वे सवार न हो सके और स्टेशनके प्लाटफार्मसे खदेड़ दिये गये। सब अकाली मुसाफिरखानेमें आकर ठहरे और अगली गाड़ीकी इन्तजारी करने लगे। रेलवेके अफसरोंने वहांसे भी चले जानेके लिये कहा, पर अकालियोंने कहा हमें अगली गाड़ीसे अमृतसर जाना है,हम और कहां जायें? इसपर रेलवे सशस्त्र पुलीस, रिसाले और गोरी पलटनें बुलाई गयीं। अकाली लोग जमीनपर लेट गये।

कहा जाता है कि पुलीस और फौजने सगीनों और बन्दूकों-के कुन्दोंसे उन्हें मारना शुरू किया। अकाली वीर यह कहते हुए कि "किरचोंकी मार फूलोंकी वर्षा है।" मार खाली। सैकड़ों जखमी हुए। हिन्दू मुसलमान दोनोंने सेवा करनी आरम्भ कर दी है। पहिले तो मोटर लारीपर सराय ले गये पर वहां अधिकारीकी इन्कारपर आर्य समाज तथा अन्य स्थानोंमें जखमी रखे गये।

———

'मौत कबूल है'

३५

अमेरिकाकी लड़ाईमें कर्नल ग्लेजरने एक अमेरिकनको कैद कर रखा था। इसका नाम गैडसडेन था। यह बड़ा ही बीर कर्नल था। इसने कई बार अंग्रेजोंको हराया भी था। इसके पकड़नेसे अंग्रेजोंका पक्ष निर्बलसे सबल हो गया। संयोगसे अमेरिकनोंने भी एक अंग्रेजको पकड़ रखा था इसका नाम मेजर आड्रे था। इसके संग शर्त यह थी कि अगर अमेरिकाका गैडसडेन छोड़ दिया जाय तो मेजर आड्रे भी छोड़ दिया जायगा। अमेरिकावाले किसी प्रकार अपने गैडसडेनको छुड़ाना चाहते थे, उन्हें एक अच्छी तरकीब सूझी; उन्होंने कहला भेजा कि अगर गैडसडेन न छोड़ा जायगा तो आड्रेको गोली मार दी जायगी। अब तो ग्लेजर महाशय घबड़ाये। उन्होंने भी कैदी गैडसडेनके पास संदेश भेजा कि अगर तुम अपना प्राण बचाना चाहो तो बदलेमें आड्रेको वापस भेजवाओ, नहीं तो उसके मरनेपर तुम्हारा भी वध किया जायगा। इस बातको सुनते ही गैडसडेन बड़ा क्रोधित हुआ उसने कहला दिया कि चाहे कोई मरे या जिये, हारे या जीते पर मैं वाशिंगटनकी स्वतन्त्रताका विचार न छोड़ूंगा। मुझे मौत कबूल है पर गुलामी नहीं। इस उत्तरपर ग्लेजर महाशय बड़े प्रसन्न हुए और उस कैदीको उसकी बीरता पर प्रसन्न होकर बिना किसी शर्तके छोड़ दिया।

'मेरा कसूर ही क्या ?'

३६

राजस्थानके श्रावण शुक्ल ११ सं० १९७८के पर्चेमें लिखा है कि पं० राधामोहन गोकुलजीको भी १०८ दफासे एक सालकी कड़ी कैदकी सजा हुई, आपका वक्तव्य और सन्देश यह था—

"वह कानून जो प्रकृतिके विरुद्ध हो और हमारे देश-वासियोंने बहुमतसे बनाकर अपनी स्थापित की हुई अदालतोंमें अपने ही आदमियों द्वारा व्यवहृत न किया हो, मेरे लिये कानून नहीं हो सकता। मैं देखता हूँ कि हिन्दुस्थानमें मौजूदा कानून जिस तरहपर आजकल बर्ता जाता है वह अपने ही आन्तरिक भावोंके विरुद्ध होता है और मनुष्यके कुदरती हकोंके खिलाफ जाता है। वह चश्मा जिससे निकलकर राजद्रोहका कानून हमारे देशबासियोंके ईश्वरदत्त अधिकारोंको कुचलता है नौकर-शाही है, जिसके न्याय, ईमानदारी और आत्माकी शुद्धिपर मेरा बिलकुल विश्वास नहीं। यदि पापको पाप कहना पाप है, यदि वर्तमान कानून उन घोर पापोंके पृष्ठपोषक हैं जिन्हें प्रकट करने और सुधारनेका हक संसारके प्रत्येक आदमीको है, चाहे ऐसा करनेसे किसी साम्राज्यका नाश हो, अथवा किसी राष्ट्रका नाश हो, तो कमसे कम मैं तो न उस कानूनका विश्वास नहीं करता और न उसे कानून ही मानता हूँ। इस दशामें मैं न तो किसी किस्मसे ऐसे नाटकमें भाग लेनेको तैयार हूँ और न

सहायता देनेको, चाहे इसका नाम न्याय सम्बन्धी विचार (Cubicial trial) ही क्यों न रक्खा गया हो। मैं निर्दोष हूं। मैं अपने उन देशवासी लोगोंकी दृष्टिमें जो अपने लिये और मेरे लिये सब प्रकारके कानून बनानेके अधिकारी हैं पूर्णतः निर्दोष हूँ। मेरे देशका भावी छुटकारा यह चाहता है कि मैं इन अत्याचारोंको जो बृटिश सरकार द्वारा हुए हैं और होते हैं संसारमें प्रकट करूँ।

सन्देश

३७

मेरे प्यारे देशबन्धुओ !

मेरे व्याख्यानोंके कुछ अंश मुझपर मुकदमा चलानेवालोंने अत्यन्त कुटिलता और बुरे भावोंसे प्रेरित होकर बिगाड़े तथा बदले हैं और फिर मुझपर उन्होंने मढ़े हैं, जिसके लिये मैं उन्हें पूरी तरह क्षमा करता हूँ। मेरी यही प्रार्थना है कि भगवान दूसरोंपर मुकदमा चलानेवाले प्रत्येक आदमी और जातिमें सद्-बुद्धि और समवेदना पैदा करें जिससे भूमिके कोने-कोने राम-राज्यकी स्थापना हो। मुझे आशा है कि आप अपने प्रिय देश-बन्धुओंको अंगरेजोंकी सरकारके हाथसे दुःख भोगते हुए देखकर आपेसे बाहर न होंगे, जो कि किसी दूसरे कारणसे नहीं किन्तु सचाईके लिये ही दुःख भोगते हैं। यह याद रखिये कि भारतीय लोग जाति, रङ्ग, मत, धर्म या भाषाके भेदके कारण

किसीके प्रति द्वेष नहीं करते। भारतीय केवल दुनियापर मनुष्य जाति बसी हुई देखना चाहते हैं और उन्हें कुत्तोंकी तरह रोटीके टुकड़ेके लिये झगड़ते हुए नहीं देखना चाहते। मनुष्य के प्रति अन्तःकरणमें प्रेम रखते हुए और पापसे घृणा करते हुए ही पापीके सुधारकी परमात्मासे प्रार्थना करते हुए यदि तुम कार्यमें लगे रहोगे, तो निश्चय ही सफल होओगे। परमात्मा और मनुष्यमात्रके प्रति प्रेम तुम्हें शक्ति देगा कि तुम अपने कन्धोंसे विदेशी सत्ताका जुआ उतारकर फेंक सको और दूसरे जो तुम्हारी सहायता चाहते हैं, उन्हें सहायता दे सको। तुममेंसे जिन्हें अबतक महात्मा गांधीमें विश्वास नहीं हुआ है, उनमें विश्वास पैदा करो और इस धार्मिक लड़ाईके लिये उनके झंडेके नीचे जमा हो जाओ।

मैं अपने आश्रम निवासियोंसे बहुत ही प्रसन्न हूँ जो कि उस कार्यको चलानेके लिये तैयार हैं। जिसे मेरे पहले दो मित्रों-ने शुरू किया था। मुझे उनके शब्दोंमें पूरी श्रद्धा और पूरा विश्वास है। साथ ही मैं अपने उन मित्रोंका कृतज्ञ हूँ जिन्होंने आश्रमकी आर्थिक सहायताके लिये मुझसे वायदा किया है।

बन्धुओ! इतनाही काफी है। पूज्य नेता महात्मा गांधीका अनुसरण करो और उनकी आज्ञाओंका निर्भय होकर साहसके साथ पालन करो। बिदाईके लिये आज्ञा दो और स्वीकार करो मेरा वन्देमातरम्।

———

"ओसलियाविया ही मेरी कब्र है"

३८

सन् १९०५ ई० की २७ मईको रूसके बालटिक बेड़े और जापानी बेड़ेमें मुठभेड़ हो गयी। थोड़ी देरतक युद्ध होनेके बाद ओसलियाविया बड़े बेतरह आहत हुआ। उसपरकी चिमनी टूट गयी। उसके मस्तूल और डेक सब खराब हो गये। यहांतक कि उसके चलनेकी गति भी रुक गयी। वह एका-एक एक जगह स्थिर हो खड़ा रहा। एडमिरल लोगोंने भी समझा कि अब ओसलियावियापर किसी किस्मका प्रहार करना फजूल है। वह अपने युद्धमें लगे रहे। इधर ओसलियावियाकी बुरी हालत हुई। हवाके बहनेसे ऊपर धांयधांयकर अग्नि प्रचण्ड हो रही थी। नीचेसे पेंदेमें हरहर शब्द करता हुआ जल भर रहा था। बड़ा ही भयंकर दृश्य उपस्थित हो गया।

इस जहाजके डूबनेके सम्बन्धमें रूस जापान युद्धमें लिखा है कि—"जब ओसलियाविया तीन चौथाई डूब गया तब वह और भी तेजीसे डूबने लगा। उसका पेंदा ऊपर तथा ऊपरका हिस्सा नीचे हो गया। सिपाही लोग चिल्लाने लगे। कितने ही कूद पड़े। कितने ही सुरक्षित स्थानमें जा छिपे पर डूबते हुए जहाजमें सुरक्षित स्थान कैसा? वह समय आया जब साराका सारा जहाज डूब गया।"

डूबते समय ओसलियावियाके कप्तानने कहा—"मैंने

जीतेजी आत्मसमर्पण नहीं किया। प्यारे रूस तेरे नामपर मैं मरता हूँ। ओसलियाविया ही मेरी कब्र है" यह कहता हुआ बहादुर कप्तान उसी जहाजके संग मर मिटा, पर जापानियोंके आगे आत्मसमर्पण नहीं किया। धन्य है ऐसे वीरोंको।

"हां घंटी मैंने बजायी थी"

३९

लंडनके मैनचेस्टर गार्जियनने लिखा है कि—नौ जर्मन मारे गये। इक्कीस भयंकर रूपसे आहत हैं। दो फ्रेंच सिवीलियनोंको ठेसमात्र लगी है। मैंने स्वयं देखा कि जर्मन मजदूरोंकी नौ लाशें कारखानेके सामनेवाले बरामदेमें पड़ी थीं। बड़ा ही भयंकर दृश्य था। एकको तो सामनेसे चोट लगी थी और पीछे सिरमें बड़ा छेद हो गया था। आठ और भिन्न भिन्न स्थानोंमें आहत पड़े थे। इस समय कारखाना क्या था मानो युद्धस्थलका अस्पताल था।"

जबसे फ्रांसीसियोंने रूस प्रदेशमें आक्रमण किया उसी दिन से वहां नाना प्रकारकी नई नई बातें होने लगीं। कारखानेपर कब्जा करते ही भीड़ सड़कोंपर इकट्ठी हो गई और इस विचारसे वह और भी न टली कि कदाचित् कहीं अग्नि न लगा दी जाय। फ्रांसीसी सिपाहियोंने दाहिने बायें बन्दूक छोड़ना आरम्भ किया।

इसी समय भीड़ भागने लगी पर फिर भी गोलीका छोड़ना जारी रहा। फ्रांसीसियोंका कहना था कि मजदूरोंने घण्टी बजा एकत्रित होकर आक्रमण करना चाहा था।

भीड़ हटनेपर फ्रांसीसी सिपाहियोंने कहा, "घण्टी क्यों बजाई गई ?" एक मजदूरने कहा—इसलिये कि आप लोग कब्जा करें। बिना घण्टी बजे हमलोग अपना अपना औजार नहीं रख सकते थे। फ्रेंच अफसरने कहा—मैं घंटी बजानेवालेको देखना चाहता हूं। एक मजदूरने कहा—"मैंने घण्टी बजायी थी" इस पर वह जर्मन तुरन्त पकड़कर फौजी अदालतके सुपुर्द किया गया। फौजी अदालतके सामने भी उसने यही कहा—"हां मैंने घण्टी बजायी थी। मैंने अपना कर्तव्य किया।" इसपर जजने कहा—"अच्छी बात है जरा जाकर बन्दूककी घण्टीकी आवाज सुन आओ।" यह कह उसे सिपाहियोंके हवाले किया।

"मैं अपने ही जीवनमें स्वराज्य देखना चाहता हूं"

४०

श्री विट्ठलभाई पटेलके विचार।

विशेष कांग्रेसमें खादीके प्रचार तथा ब्रिटिश मालके बहिष्कार संबंधी प्रस्तावका समर्थन करते हुए श्री विट्ठलभाई पटेलने नीचे लिखे आशयका व्याख्यान दिया—

सभापति महोदय, बहनो और भाइयो, स्वराज्य प्राप्तिके लिये ब्रिटिश मालका बहिष्कार बिलकुल उचित उपाय है, मैं मानता हूँ कि हमारे विधायक कार्यक्रमको पूरा करनेसे अर्थात सारे भारतको बिलकुल खद्दरमय बना देनेसे स्वराज्यका मिलना संभव है, परन्तु मैं कहता हूँ कि सारे देशको खद्दरमय बनानेमें बड़ा समय लगेगा। मैं बुड्ढा आदमी हूँ। अपने ही जीवनमें जल्दीसे स्वराज्य देखना चाहता हूँ। अतः मेरी राय है कि स्वराज्य प्राप्तिके दूसरे उपाय भी काममें लाये जायं जिससे स्वराज्य अति शीघ्र प्राप्त हो जाय। ऐसा दूसरा उपाय ब्रिटिश मालका बहिष्कार है। ब्रिटिश लोग यहां व्यापार करने आये थे। पर राज्य करनेके लिये ठहर गये। वे यहां पौंड, शिलिंग, पेंसके लिये आये थे और रुपये कमानेके लिये ही आजतक हैं। यदि उनकी कमाई बन्द हो जाय तो वे बोरिया बिस्तर उठाकर यहांसे फौरन चल देंगे। एक मिनट भी न ठहरेंगे। हम इतने मूर्ख हैं कि उनसे व्यापार करके उन्हें ३ अरब रुपया हर साल देते हैं। यदि हम स्वतन्त्र होना चाहते हैं तो हमें यह बन्द करना चाहिये। इसके बन्द करनेका उपाय ब्रिटिश मालका पूरे तौरपर बहिष्कार करना है। यदि ब्रिटिशकी यह कमाई बन्द हो जाय तो वे एक दिनभी यहां न रहें। इसमें कांग्रेस क्रीडके खिलाफ बात कुछ भी नहीं है। यह प्रैक्टिकल पालिटिक्सकी बात है। इसमें प्रेम और घृणाका प्रश्न ही नहीं उठता। यदि कहा ही जाय कि इसमें हिंसाका भाव है तो मैं पूछता हूँ कि बिलायती कपड़ोंके जलानेमें

कौनसा प्रेम था ? क्या उसमें हिंसाका भाव नहीं था ? मेरी समझमें ब्रिटिश मालका बहिष्कार वैसा ही है जैसे विलायती वस्त्रोंका जलाना और यदि इसमें घृणाकी बू आती है तो मैं इसे अपने लिये गौरवकी बात समझता हूँ। सब लोग महात्मा नहीं बन सकते और मैं नहीं चाहता कि आप सब महात्मा बनें। मैं चाहता हूँ कि हम सब साधारण मनुष्य हों, जिनके लिये डायर ओडायरको प्रेम करना सम्भव न हो। मैं भारतमें ३३ करोड़ देवता नहीं चाहता, मनुष्य चाहता हूँ। हम केवल यह कहते हैं कि हम ब्रिटिशसे प्रेम नहीं करते। इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि हम उनसे घृणा करते हैं। हम नहीं चाहते कि वे हमपर राज्य करें। मेरी समझमें ब्रिटिश मालका बहिष्कार असहयोगका एक अंग है न कि उसके सिद्धान्तका खण्डन। यदि हम जल्दी स्वराज्य लेना चाहते हैं तो हमें मिलकर ब्रिटिश मालका बहिष्कार अवश्य करना चाहिये।

"मैं चोटी नहीं रखूंगा"

४१

जिस समय चीनमें जाग्रति हुई और चीनी कुछ उन्नति पथकी ओर अग्रसर हुए, उस समय कुछ स्वदेशाभिमानियोंके मनमें यह भी भाव उठा कि युद्ध करते समय चीनियोंकी चोटियां अक्सर पकड़ ली जाती हैं अस्तु ये बहादुर कहाते हुए भी पराजित हो जाते हैं। यही विचारकर कुछ सैनिकोंने अपनी चोटियां

कटवा दीं। चीनके पुराने ख्यालके लोग इसपर बिगड़ गये।

चीनके प्रजातन्त्री लोग चोटी न रखनेके पक्षमें थे। एक समय चीन सम्राटके पक्षपाती जेनरल चांगने मार्शललाके नाम पर बड़े बड़े अत्याचार किये। जिनके पास धन था, उनका धन लूट लिया गया और खासकर जिनके सिरोंपर चोटियां नहीं थीं वे बेखटके मारे गये। बिना चोटीके कटे हुए सिर जेनरल महाशय स्वयं देखने आये थे।

विद्रोहियोंने अपने झण्डेका रङ्ग श्वेत रखा था। अस्तु जो कोई सफेद वस्त्र या सफेद रूमालके संग भी निकलता वह भी गोलीका शिकार हो जाता था। इस प्रकार हजारों आदमी मारे गये। एक दिन नगरके इं केग फाटकसे कुछ उदारचित्त चीनी चोटियां कटाये गुजर रहे थे कि सहसा इन्हें पकड़कर चांगके आधीनी अफसरके पास लाया गया। अफसर बैरनने पूछा कि ये चोटियां क्यों कटाई गईं। उन लोगोंने जवाब दिया इस चोटीपर सारा संसार हँसता है; अस्तु जिससे मेरे मुल्ककी हँसी न हो इसीलिये इन चोटियोंको कटवा डाला है। इसपर अफसरने कई बार चोटी रखनेके लिये कहा पर वीरोंका यही उत्तर था—"मैं चोटी नहीं रखूंगा।" अन्तमें सभी चीनी इस उत्तरपर मारे गये।



'पेटके बल रेंगकर दवा न लाओ'

४२

जिस गलीमें मिस शेरउडका अपमान किया गया था उस गलीमें लोगोंको कोड़ा मारनेका स्थान नियुक्त किया गया। हुक्म दिया गया कि प्रत्येक गोरेको लोग सलाम करें और जब गलीसे गुजरें तब पेटके बल रेंगकर तब जायें। गलीके दोनों ओर ऊंचे ऊंचे मकान थे। घनी आबादी थी। मकानोंमें रहने वालोंको किसी न किसी कामके लिये बाहर जाना पड़ता था। लोग जराजरा कसूरपर पकड़ लिये जाते थे। चाहे कोई हो उसे पेटके बल रेंगना ही पड़ता था। डायरका भी कहना था कि उस गलीको मैंने पवित्र करार दिया क्योंकि वहां एक अंग्रेज महिला का अपमान किया गया था। हंटर कमेटीके सामने इजहार देते हुए लाला लाभसिंहने कहा—जिस खिड़कीपर बैठा बैठा मैं झांक रहा था वहां मिस्टर सोयरने आकर जबरदस्ती सलाम करने-के लिये कहा—हमें सलाम करना पड़ा। मेलरामने कहा—हमें घरमें जानेकी आज्ञा इस शर्तपर दी गयी कि हम पेटके बल रेंगे। घर जानेके लिये हमें रेंगकर गलीपार करना पड़ा।

लाला मेघमलने कहा—"मैं कपड़ेका व्यापारी हूँ। मेरी दूकान गुरुबाजारमें है। जब मैं रातको लौटा तो गोरोंने रेंगकर जानेके लिये कहा। मैं किसी प्रकार भाग गया। रातको पहरा हट जानेपर मैं घर गया। घर जाकर मैंने अपनी स्त्रीको ज्वरा-

कान्त पाया। एक हफ्तेतक मैं बाहर न निकला। अस्तु यदि मैं रेंगकर भी जाता तो कोई डाक्टर पेटके बल रेंगकर आना कबूल न करता। मैं नहीं गया।" सुना जाता है कि मेघमल की बीमार स्त्रीने भी उन्हें जानेसे यह कहकर रोका कि—"मुझे मर जाने दो पर पेटके बल रेंगकर दवा न लाओ।" स्त्री मर गयी पर उसने पतिको अपमानित न होने दिया।

'मिनिस्टरी नहीं चाहिये'

४२

श्रीदेशबन्धु दासने जो पत्र बंगालके गवर्नरके पास भेजा था वह इस प्रकार था—

मैंने आपकी बातें अपने दलके सामने रखीं और उसने यही निश्चय किया है कि आपने जो मिनिस्ट्री स्वीकार करनेकी कृपा दिखायी है उसे स्वीकार न किया जाय।

हमारे दलके सदस्योंने शपथ ली है कि शासन-सुधारके कानूनी हकोंका प्रयोग करके द्विचक्र शासनका अन्त करनेका यथाशक्ति प्रयत्न करें। अगर वे पद स्वीकारकर लेंगे तो यह कार्य नहीं किया जा सकेगा।

हमारे दलको मालूम है कि पद स्वीकार करनेपर भी भीतर-से बाधा पहुँचना संभव है। लेकिन वह इसे न्यायोचित नहीं समझती कि वर्तमान शासनप्रणालीमें श्रीमान्‌की कृपा स्वीकार करे और फिर उस शासनप्रणालीके द्वारा सरकारके

काममें बाधा पहुँचावे। इस देशकी जाग्रत जनता वर्तमान शासन-प्रणालीमें परिवर्तन चाहती है और जबतक साधारण स्थितिमें कुछ परिवर्तन नहीं होता जिससे मालुम हो कि हृदयमें परिवर्तन हो गया है, तबतक इस देशके लोग खुशीसे सरकारके साथ सहयोग नहीं कर सकते।

ऐसी अवस्थामें मुझे खेद है कि मैं हस्तान्तरित विभागकी जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकता। फिर भी मेरा दल इस न्यायोचित भावके लिये श्रीमानकी प्रशंसा करता है। 'मुझे मिनिस्टरी नहीं चाहिये।'

'एक जर्मन ही मरना जानता है'

४४

अंग्रेजोंके ग्लिटरा जहाजपर रेडक्रास लगा था। जर्मनोंको शक हुआ कि इसमें युद्धका सामान है। अतएव एक जर्मन गोताखोर उस जहाजके पास जा पहुँचा। जहाज भारकेसे कुछ दूरीपर रह गया, तब जर्मन गोताखोरने पानीके ऊपर आकर कहा, जहाज रोको मैं इसकी जांच करूँगा। यह कह गोताखोरका कप्तान उस जहाजपर चढ़ गया। रेडक्रास जहाज बढ़ता ही जाता था, रुका नहीं। अब जर्मन गोताखोरके दूसरे कप्तानने जहाज रोकनेको कहा, पर जहाज न रुका। अस्तु उसने टारपेडो छोड़नेकी धमकी दी। जहाज वालेने कहा, देखो तुम्हारा अफसर भी इसीके संग डूब जायगा इस जहाजपर चढ़े हुए अफसरने

कहा—तुम टारपेडो छोड़ो नहीं, तो यह जहाज तारवेनेटपर पहुँच जानेसे बच जायगा। एक जर्मन ही मरना जानता है।" इतना सुनते ही जर्मन कप्तानने तारपेड़ो छोड़ा और इंगलैंडका वह जहाज डूब गया। इस वीरने स्वयं अपनी जान देकर बहुत सा युद्धका सामान नष्ट करवा डाला।

'मैं तार दे चुकी'

४५

जर्मन महाभारतमें जिस समय जर्मनी अपने दलबल सहित बेलजियममें घुसा है उस समय उसके सामने कोई भी माईका लाल ऐसा न मिला जो उसकी गतिको रोकता। वह बराबर बेलजियममें घुसता गया। ब्रूसल्समें पहुँच कर उसने चारों ओर फौजी पहरा बैठा दिया और फोन गोल्ड्ज गवर्नर नियुक्त हुए। एक दिन एक जर्मन रिसाला पहरा दे रहा था कि सहसा उसकी निगाह एक तारघरपर पड़ी। वहां जाकर उसने देखा कि तीन लड़कियां काम कर रही हैं। दो तारपर थीं और एक पहरा देती थी। सैनिकोंने उतरकर उस घरमें प्रवेश किया। जातेही उन्होंने एक पर तलवारसे वार किया। तीसरी लड़कीने एक गोली मारी। जर्मन सैनिक इस तीसरी लड़कीकी ओर झुके थे कि दूसरी लड़कीने तार दे दिया—"जर्मन एटवर्पकी ओर आजही बढ़ेंगे।' होशियार हो जाना।" वह दूसरा संदेश दे ही रही थी कि जर्मन सैनिकने कहा "तार रोक दो।" जवाबमें लड़कीने कहा—'मैं

तार दे चुकी।' इतना कहना था कि जर्मन सैनिककी तलवार लड़कीके गर्दनपर दिखाई पड़ी। देखते देखते खटसे वीर बालाका केशों सहित सुन्दर मुखड़ा टेबुलपर गिर पड़ा।

'सुखकी घड़ी'

४६

यूरोपके दक्खिनमें यूनान एक देश है। यह देश प्राचीन-कालमें अति सभ्य और शूर-वीरोंकी खान गिना जाता था। इसमें कई छोटी-मोटी रियासतें थीं। ये रियासत प्रायः परस्पर युद्ध किया करती थीं। एक समय थीब्स और स्पार्टा नामी दो देशोंमें परस्पर युद्ध छिड़ गया। दोनों ओरसे वीर बड़ी ही वीरतापूर्वक परस्पर युद्ध करने लगे। थीबीयन वीरोंका नायक भी लड़कर घायल हुआ। वह सयोगसे रणस्थल हीमें पड़ा रहा। पड़े-पड़े वह अपने वीरोंको बराबर उत्साहित करता रहा। उसे अपने घावोंकी जरा भी परवाह न रही। उसके वीर बराबर युद्ध करते रहे। यहांतक कि अन्तमें उसे अपने देश थीब्सके विजयी होनेका समाचार सुनाई पड़ा। शत्रुपक्षके झंडे उसके सामने लाये गये। वह देखकर प्रसन्न हुआ और शत्रुपक्षके झंडेका भी आदर करनेको कहके वह मूर्च्छितसा होने लगा। उसने मरते समय कहा—"मेरे वीर साथियों मेरे दुखों पर आंसू न बहाना, बल्कि प्रसन्न होना कि मैं अपने देशकी सेवामें मर रहा हूँ। एक कप्तानके लिये इससे बढ़के और 'सुखकी घड़ी' क्या हो सकती है

कि वह अपने देशके लिये अपने मित्रोंसे पहले और सामने मर रहा है। मेरा देश स्वतंत्र हुआ। स्पार्टा देशका गुमान टूटा। वह जो बात बातमें थोब्स देशको लज्जित करता था, वह समय गुजर गया। अब खुशी मनाओ और शत्रुको उस प्रकार न दबाओ जैसे वे हमारे देशको निबल पाकर दबाते थे। आखिरी सलाम।

'मैं गुरु ग्रन्थकी रक्षा करूंगा ?'

४७

जिस समय अंग्रेजोंने पंजाबमें पैर फैलाया उस समय नाना प्रकारकी कूटनीतिका प्रयोग किया गया। यदि वे कूटनीतिका प्रयोग न करते तो पार भी न पाते। सिखोंकी फौजी ताकत इतनी बढ़ी हुई थी कि वहांके कितने ही लोगोंने यह निश्चय कर लिया कि बिना फौजी ताकतका नाश किये पंजाबमें शासन हो ही नहीं सकता। अस्तु, सिख रानीकी ओरसे अंग्रेजोंके पास संदेश गया। अंग्रेज तो गृहकलह चाहते ही थे। उन्हें मौका मिल गया। कई एक लड़ाइयोंके बाद सुबरावँकी लड़ाईमें जब सिख परास्त होने लगे, तब वृद्ध सेनापति श्यामसिंह अटारी वालेने—कहा मैं 'गुरु ग्रन्थ साहब' की रक्षा करूंगा। उसने सेनाका भार ले अंग्रेजोंसे खूब मोरचा लिया। यहांतक कि अंग्रेजोंको अपना फौजी डेरा डंडा पीछे हटाना पड़ा। समय पाकर अंग्रेजोंने फिर आक्रमण किया। इस बार बहुतसे सिख भी अंग्रेजोंकी ओर मिल गये। अस्तु, ऐसे कठिन समयमें भी श्यामसिंहने,

हिम्मत न हारी। उसने फिर एक बार सिख रिसालेको सम्हाल-कर काला झंडा उठाया और अंग्रेजोंसे दो दो हाथ लिये। उस बार अंग्रेजोंने पूरी तैयारीके साथ धावा किया था। दो दिनतक लड़नेके बाद जब कोई न बच रहा। तब श्यामसिंह अपने रिसा-लेके साथ शत्रुओंके दलपर टूट पड़ा और अंग्रेजी तलवारसे टुकड़े-टुकड़े होकर स्वर्ग सिधारा।

'मौतकी घाटी'

४८

उदयपुरके राणाप्रतापसिंहने २५ वर्षतक जंगल जङ्गल भट-कना स्वीकार किया। पर अकबरके आगे दिल्लीमें सलामी न बजाई। भाईका दुश्मन भाई, यह कहावत प्रसिद्ध है। जिस समय राजा मानसिंह गुजरात विजयकर लौट रहे थे उस समय वे उदयपुरसे होते हुए आये। स्वागतमें उदयपुरके राणा प्रतापसिंह ने अपने पुत्र अमरसिंहको भेज दिया, पर आप स्वयं न पधारे। इसपर राजा मानसिंह बड़े अप्रसन्न हुए। उन्होंने शीघ्र ही युद्ध करनेकी धमकी दी। प्रतापसिंहने भी इसे स्वीकारकर लिया। अस्तु शीघ्र ही राजा मानसिंहने उदयपुरपर चढ़ाई कर दी। अकबरका दल शीघ्र ही हल्दीघाटीपर आ पहुँचा। इधरसे राणाने भी बाईस हजार राजपूतोंको लेकर अकबरका सामना किया। भयंकर युद्धके बाद जब प्रतापसिंह चारों ओरसे घिर गये, तब दूरसे ग्वालियरके मन्नाझालाने देखा कि राना तो अब मरना ही

चाहते हैं, अतएव वह पांच सौ सवारोंके साथ भयंकर युद्धमें टूट पड़ा और यह कहता हुआ कि "बहादुरो यह मौतकी घाटी है" भयंकर मारकाट मचा दी और प्रतापकी आंगी छीनकर उसने स्वयं अपने ऊपर लगा ली और प्रतापको साफ निकल भागनेके लिये कहा। प्रताप तो सरदारोंके कहनेसे एक ओर निकल गये और मन्नाझाला अपने पांचसौ साथियोंके सहित मौतकी घाटीमें कट मरा। यह लड़ाई हल्दीघाटीकी लड़ाईके नामसे प्रसिद्ध है। राणाके बाईस हजार राजपूतोंमें १४ हजार कट मरे और ८ हजार फिरकर वापस आये।

'घासका एक एक तृण जला डालूंगा'

४९

देशके लिये बलि देनेवाले तो आयरलैंडमें एकसे एक हुए हैं पर राबर्ट एमेट ऐसा बिरला ही हृदयवाला व्यक्ति फांसीके तख्तेपर चढ़ा होगा। गत २५० व ३०० वर्षोंका उसका इतिहास शहीदोंके खूनसे रंगा है। इसमें ऐसे आदमी हैं, जिन्होंने युद्धके तुमुलघोष और उत्तेजनाके बीच प्राण विसर्जन किया है। इसमें वे हैं जो फांसी और सूलीपर हंसते-हंसते चढ़ गये हैं। इसमें वे हैं जिनकी गर्दन उड़ा दी गई है और उनकी संख्या भी कुछ कम नहीं है, जिन्होंने बृटशकी अंधेरी कालकोठरीमें घुल-घुलकर इंच-इंच गलकर स्वदशके लिये प्राणदान किया है।

जिस समय एमेट पकड़कर न्यायालयमें लाया गया उस समय उसने जो वीरोचित वचन कहे हैं वे सुनने योग्य हैं। माई लार्ड, आप मेरे ऊपर फ्रांससे सम्बन्ध रखनेका दोष लगाते हैं, पर यह सही नहीं है। हां, मैंने जरूर मदद मांगी और इसलिये कि मेरा देश स्वतन्त्र हो। यदि फ्रांसीसी आक्रमणकारी शत्रुके रूपमें आवें तो मैं अपनी पूरी ताकतसे उनका मुकाबला करूंगा। हां, मेरे देशबन्धुओं मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि उस अवस्थामें तुम एक हाथमें तलवार और दूसरीमें मशाल लेकर समुद्र तट-पर उनका सामना करो। मैं युद्धकी सम्पूर्ण विनाशकारी भयानकताके साथ उनसे लड़ूंगा। मैं अपने देशबन्धुओंको विवश करूँगा कि फ्रांसीसियों द्वारा इस देशके अपवित्र होनेके पहिले ही उनके जहाजोंको नष्ट कर दें। यदि वे किसी प्रकार जमीनपर उतर भी आयें तो मैं प्रत्येक इंच जमीनके लिये लड़ूंगा। मैं घासका एक एक तृण जला डालूंगा और मेरी कब्र स्वाधीनताके लिये अन्तिम मोर्चा ले। यदि मैं मर गया तो स्वयं जो मैं न कर सका उसे पूरा करनेका भार अपने देशवासियोंपर छोड़ जाऊँगा।

आयरलैण्डको गुलाम होनेका क्षोभ है और वे उससे मुक्त होना चाहते हैं। मैं अपने देशके लिये वही गारंटी प्राप्त करना चाहता था, जो वाशिंगटनने अमरीकाके लिये प्राप्त की थी। ऐसी सहायता प्राप्त करना, जो अपने उदाहरणमें उतनी ही महत्त्वपूर्ण होगी जितनी अपनी बहादुरीमें होती। हमारा देश

किसी भी उत्पीड़क शत्रुके साम मैं सिर न झुकायेगा।

स्वतन्त्रताकी श्रेष्ठ मर्यादाके साथ मैं अपने देशकी वेदीपर लड़ता और मेरे देशका शत्रु मेरी निर्जीव लाशपर पांव रखे बिना आगे न बढ़ सकता। मैंने जो कुछ किया सदा अपने देशकी भलाईके लिये किया। अब मेरे ऊपर कलंककी कालिमा लगाई जायगी और मैं उसका प्रतिकार न करने पाऊँगा।

मुझे सिर्फ चन्द ही शब्द और कहने हैं। मैं अपनी ठण्डी और मौन कब्रमें जा रहा हूँ। मेरे जीवनका दीपक करीब-करीब बुझ चुका है। मेरी दौड़ खतम हो चुकी है। कब्र मेरे स्वागतके लिये खुली है और मैं उसकी गोदमें गिरनेवाला हूँ। मेरा एक अनुरोध केवल मौन रहनेका है। मेरी कब्रपर कुछ न लिखा जाय। जब मेरा देश पृथ्वीके राष्ट्रोंमें स्थान प्राप्त कर ले तभी मेरी समाधिका आलेख लिखा जाय। उसके पहिले नहीं। मुझे जो कुछ कहना था कह चुका। मेरे देश, आखिरी सलाम!

एमेटको दूसरे दिन फांसी दे दी गयी। शरीर उसका अब भी गरम था। जल्लादने उसके शवको तख्तेपर रखकर गड़ासे से अलग कर दिया। ज्योंही उसने सिर उठाकर आयरलैण्डकी जनताको दिखाया, त्योंही समस्त आयरलैंडके निवासी झरझर करके आंसू बहाने लगे। कितने ही दौड़कर उसके खूनको रूमालमें लगाने लगे। एमेट; तुम सदा समस्त आयरलेंडके हृदय में विराजमान हो।

'मैं निर्दोष हूँ'

५०

पूना, २० अगस्त।

एक चिट्ठी और एक समाचारपत्र सेन्टर स्ट्रीटके एक नाऊ तक पहुंचानेके सम्बन्धमें वार्डरको रिशवत देनेके लिये मौलाना हसरत मोहानी और वार्डर सिपहानरुसूलपर जेल विधानकी ४२ वीं और ताजिरात हिन्दकी १६१ वीं धाराओंके अनुसार अभियोग लगाया गया। मुकदमा यरवदा जेलमें आरम्भ हुआ।

आरम्भमें मौलाना हसरत मोहानीने कहा कि मैं इस समय लिखित वक्तव्य नहीं दे सकूंगा। १५ तारीखको जो मैंने ३७ गवाह दिये थे उनमें, मैं ४ गवाह और जोड़ना चाहता हूँ। आपने इस बातकी शिकायत की कि जेलके अधिकारी मुझे अपना वक्तव्य तैयार करनेमें आवश्यक सहूलियत नहीं देते। मेरा जेल विवरणपत्र केवल १५ मिनटके लिये मुझे दिखाया गया और पेंसिल भी मुझसे छीन ली गयी है।

मैजिस्ट्रेटने वादा किया कि वक्तव्य तैयार करनेके सम्बन्धमें पूरी सहूलियत दी जायगी। पर आपने पूछा कि इतने गवाहोंको पेश करनेका क्या कारण है। इन गवाहोंमें सर मॉरिस हेवर्ड (गवर्नरके एक्जीक्यूटिव कौंसिलके सदस्य,) जेलोंके इंसपेक्टर जनरल, श्री कोजाजी (बैरिस्टर तथा समाचारपत्रके सम्पादक)

भी हैं।

मौलाना हसरत मोहानीने कहा कि मेरे मुकदमेके लिये इन ४१ गवाहोंका रहना आवश्यक है और अगर इसमें कोई परिवर्तन किया गया तो मेरी पैरवीमें बिलकुल गड़बड़ी हो जायगी।

"अभियोग झूठा है"

इसके बाद मौलाना साहबने कहा कि मैंने कोई भी अपराध नहीं किया है। ये सब बिलकुल झूठे हैं।

आपने आगे कहा कि सिपहानरसूल सरकारी नौकर नहीं हैं बल्कि वे एक राष्ट्रीय कार्यकर्ता हैं और आप राजनीतिक कैदियोंके सहायतार्थ ही नियुक्त किये गये हैं। जिस बातके लिये मुझपर अभियोग लगाया गया है वह जेलकी साधारण बात है और ऐसी बातोंका कोई खयाल नहीं किया जाता। मुझे जेलमें खानेका अपना प्रबन्ध करनेका अधिकार है और मैं अराजनीतिक पत्र भी लिख सकता हूँ। आपने अन्तमें कहा कि मैं समाचारपत्र रोज पाता हूँ और मैं अधिकारियोंको चुनौती देता हूँ कि वे इसे बन्द करें।

अन्तमें मैजिस्ट्रेटने कहा कि मैं अभियुक्तको उन्हीं गवाहों-को पेश करने दूंगा जो वास्तविक अपराध जानते हों।

मौलानासाहबने कहा कि मैं ऐसी हालतमें हाईकोर्टमें अपील करूंगा।

मैजिस्ट्रेटने कहा कि अभियुक्तको कल गवाहोंकी पेशी करनेके लिये तैयार रहना चाहिये। 'पायोनियर'

'मैं जिन्दा गड़ जाऊँगा'

५१

प्राचीन कालमें अफरीका तटपर कार्थेज नामी बड़ा भारी राज्य था। उनके व्यापारकी धाक समस्त यूरोप ही नहीं वरन् एशियापर भी थी। एक समय कार्थेजके पासही सैरीन नामी प्रदेशसे झगड़ा मच गया। दोनोंका निबटारा किस प्रकार हो। बहुत दिनोंके झगड़ेके बाद अन्तमें यह तय हुआ कि दोनों राज्य-के दो दो आदमी एक दूसरे राज्यकी ओर चलें। जहांपर इनकी परस्पर भेंट हो वहीं दोनों राज्योंकी सीमाका अन्त कर दिया जाय। अतएव दोनों ओर लोग चले। कार्थेजवाले कुछ तेज रफ्तारसे चलकर बहुत दूर निकल आये। सैरीनवाले कुछ पीछे पड़ गये। यह झगड़ा फिर न निपटा, क्योंकि इसमे कार्थेजवालोंके हिस्सेमें बहुत अंश पड़ता था। अतएव फिर लड़ाई बचानेके लिये यह तय हुआ कि अगर कार्थेजवाले उन्हीं पैरों लौटकर जहां पहुँचे, वहीं जिन्दा गाड़ दिये जांय तो हमें यह शर्त कबूल है। अस्तु, दोनों देशभक्त कार्थाजिनियन उलटे पैर लौट गये और सन्ध्या समय जहां लौटे वहीं जिन्दा गड़ गये। ये दोनों फिलीनी वंशके थे। कार्थेजवाले तबसे इनका पूजन देवताके समान करते हैं स्वदेश प्रेममें दोनों भाइयोंने जिन्दा गड़ना स्वीकार कर लिया।

'मेरी कब्र हिंदुस्थानमें बने'

५२

पानीपतकी तीसरी लड़ाई जो मराठों और मुगलोंके बीच हुई थी एक बहादुर मुसलमानने हिन्दुस्थानके वास्ते जान गँवाई। इसका नाम था इब्राहीमखां गार्डी। यह सात लाख फौजका अफसर था। संयोगसे यह अहमदशाह अब्दाली द्वारा पकड़ लिया गया। मुसलमान होनेके नाते अब्दालीने बहुत चाहा कि उसे अपनी ओर मिला लें? पर वह किसी प्रकार राजी न हुआ। अन्तमें जब मराठोंके सिर काटे जाने लगे? तब उसे यह दृश्य दिखाया गया और कहा गया कि तुम्हारी भी यही हालत होगी। इब्राहीमखां गार्डीने कहा—"जनाब हिन्दुस्थान मेरा वतन है। मेरे वतनपर आप क्या अगर कोई पीर पैगम्बर चढ़ाई करे तो मैं उसे भी मार डालनेके लिये बन्दूक छोड़ूंगा। देश और धर्मसे क्या वास्ता? जिसके अन्न पानीसे यह जिस्म बना है, उसपर उसी का अख्तियार है।" इस जवाबसे अहमदशाह अब्दाली बड़ा नाराज हुआ और उसने फौरन उसका सिर काट लानेका हुक्म दिया। सिर काटे जानेके पहिले इब्राहीमखां गार्डीने कहा कि मारे जानेके बाद मेरी कब्र हिन्दुस्थानमें ही बने, ताकि मैं अपने मादरे वतनकी गोदमें सोऊँ। अहमदशाह अब्दालीने इब्राहीमखां गार्डीकी यह प्रार्थना स्वीकार की और कतलके बाद उसकी लाश मराठोंके हवाले की।

"भाई सीनेमें मारो"

५३

जिस समय रूस देशमें जारका राज्य था उस समय वहां बड़ी धींगा-धींगी थी। अमीरोंकी तो बन आती थी पर गरीब बिचारे पीसे जाते थे। गरीब किसानोंकी जाग्रतिसे बालशेविक दल तैयार हो गया जो जारशाहीके जुल्मका सामना बड़ी साबित कदमीसे करता।

बालशेविक दलके कितने ही आदमी गिरफ्तार किये गये और कितने ही देशसे बाहर साइबेरिया प्रदेशमें भेज दिये गये। पर जब जारका अधिक जुल्म न सहन हो सका तब जर्मन संग्रामके समय बालशेविकोंने संगठित रूपमें होकर जारकी सेनासे लड़ना आरम्भ किया। कितने ही पकड़े और मारे गये। जब बालशेविक पकड़े जाते तब उनका मुकदमा ह्वाइट न्यायालयमें होता था। एक मुकदमेका दृश्य इस प्रकार रूसीपत्रोंमें छपा था।

जज—क्या तुम लोग लालसेनाके सिपाही हो?

बाल०—हां, हम लोग लालसेनाके सिपाही हैं।

जज—तो तुम लोगोंको गोली मार दी जायगी।

बाल०—गोली खाकर मरना अच्छा है पर जारके जुल्मसे भूखों प्यासों मरना अच्छा नहीं।

जज—क्या तुम सब भूखों-प्यासों मरते हो?

बाल—हां, हम सब भूखों मरते हैं। हमारे बाल-बच्चोंको खाना-कपड़ा नहीं मिलता, मक्खन दूध तो दूर रहा।

जज—पर तुम लोग इस प्रकार लड़ाई करनेसे क्या पावोगे? खुद भी बरबाद होगे और औरोंको भी बरबाद करोगे।

बाल०—हम औरोंको क्यों बरबाद करेंगे? हमारा उद्देश्य मारना नहीं वरन् अपनेको बचाना है।

जज—यह सब थोथी दलीलें हैं। तुम लोग मुल्कके दुश्मन हो। इस वास्ते तुम सबको मैं गोली मार देनेकी आज्ञा देता हूं।

बाल०—बड़ी खुशीकी बात है।

यह सब हो जानेपर बालशेविक वीरोंको मारनेवाले सिपाही मैदानमें ले गये और एक कटघरेमें बन्द कर दिया। रातभर बिचारे कैदी शीतमें पड़े रहे। प्रातःकाल होनेपर सबको एक कतारमें खड़े होनेकी आज्ञा दी गयी। बन्दूक मारनेवाले भी आकर खड़े हो गये।

मारनेके पहिले सब कैदियोंको एक एक फावड़ा दिया गया कि वे अपनी-अपनी कब्र खोद लें। सब कैदियोंने अपनी-अपनी कब्र खोदना आरम्भ किया। प्रातःकालकी ठंडी हवा और बर्फके गिरनेसे सब कैदी सिकिर-सिकिर कर रहे थे। उनके शरीरपर बर्फके कण गिरके जम जाते थे। पर उनके चेहरेपर जरा भी मलिनता न थी। बालशेविक किसानोंको इस प्रकार मिट्टी खोदते देखकर रूसी अफसर पाकेटमें हाथ डाले चुरुट पीते-पीते हँसते थे।

लेफ्टिनेन्टने टहलते-टहलते आकर पूछा। क्यों तुमलोग क्यों बालशेविक हुए ?

बाल०—पतित जीवनके कष्टोंसे ऊबकर। संसार सुख और शांति चाहता है।

लेफ्ट०—तो फिर ऐसो सुख और शान्ति नहीं मिल सकती।

बाल०—पर हम लोगोंको इसीमें सुख और शान्ति है।

लेफ्ट०—अच्छा तो अब तुम लोग मरनेके लिये तैयार हो जाओ, क्या तुम सब अपनी कब्र खोद चुके ?

बाल०—हां, हम सब अपनी कब्र खोद चुके।

लेफ्ट०—तो फिर मरनेके लिये तैयार हो जाओ। चलो सब कब्रमें खड़े होओ।

बाल—बहुत अच्छा—यह कहकर सब कैदी बालशेविक एक कतारमें खड़े हो गये। इनके मारनेका वर्णन रूसी अखबार में इस प्रकार निकला था।

"गोली मारनेवाले ह्वाइट सिपाहियोंका दल बन्दूकें लेकर खड़े हो गये। जब फायरिंगका हुक्म हुआ, तब एक चमक निकली और फिर गोलियाँ चलीं, कितनही धराशायी हुए, कितने ही जख्मी। निशाना ठीक न लगना था फिर गोली चली। फिर कुछ लोग गिरे। इसी समय एक सिपाही बोल उठा "भाई सीनेमें मारो।"

सबके मर जाने पर लाशें कब्रमें डाल दी गयीं। ऊपरसे मिट्टी डालनेके लिये एक बालशेविकको छोड़ रखा था। बिचारे

बालशेविक सैनिकने आँसूको रोकते-रोकते अपने भाइयोंकी लाशके ऊपर मिट्टी डाल दी।

'हमारा कहना ही प्रमाण है'

५४

पण्डित माधव शुक्ल कलकत्तेमें वालंटियरोंके साथ गिरफ्तार हुए। आपपर मुकदमा चलाया गया।

अभियोग पत्र सुनानेके बाद शुक्लजी और मैजिस्ट्रेटके बीच इस प्रकार बातचीत हुई।

प्र०—आपपर जो यह अभियोग है कि आपको पुलिसने मना किया तब भी आप रास्ता रोक रहे थे, क्या यह सच है।

उ०—बिलकुल झूठ।

प्र०—आपको पुलिसने कहां पकड़। हैरिसन रोडपर या बगलकी गलीमें।

उ०—रोड और गलीके बीचमें।

प्र०—आप वहाँ किस लिये गये थे। क्या आप वहाँ वालंटियर थे?

उ०—मैं जन्मसे ही वालंटियर हूं। मैं वहां भीड़ हटाने गया था। यह समझिये कि पुलीसकी मदद करने गया था।

प्र०—आप जिस समय उस स्थानपर गये उस समय वहां कितनी भीड़ थी?

उ०—भीड़ छट रही थी।

प्र०—फिर आप क्यों गये ?

उ०—मैंने सुना कि मेरे साथी पकड़े गये हैं और बड़ी भीड़ हो रही है, अशान्तिका डर है, इसलिये शान्ति स्थापित करने मैं वहां गया था। शान्ति रखना हमारा कर्तव्य है ।

प्र०—आप अपना डिफेन्स पेश कीजिये ।

उ०—मैं डिफेन्स देना नहीं चाहता ।

प्र०—शान्ति रखनेमें जब आपने पुलीसकी मदद की तो इंसाफ करनेमें हमारी मदद क्यों नहीं करते ?

उ०—डिफेन्स देना हमारे सिद्धान्तके विरुद्ध है ।

श्रीयुत माधवशुक्लसे जब कहा गया कि आपको जो कुछ कहना हो कहिये, तब उन्होंने एक ही बात सुना दी कि सरकारी अदालतोंमें डिफेन्स देना हमारे सिद्धांतके विरुद्ध है। हमलोग जो कहते हैं; सच कहते हैं और हमारा कहना ही प्रमाण है।

अन्य अभियुक्तोंने कहा कि जो कुछ शुक्लजीने कहा है उसीमें हमारा वक्तव्य आ गया है ।

'मरनेके लिये ही छोड़ा'

५५

श्रीराजगोपालाचारीने मर्मभेदी शब्दोंमें एक हृदय विदारक घटनाका वर्णन किया है। उसपर टीका-टिप्पणी करना ही अनुचित है ! घटना बड़ी पवित्र है और पाठकोंको सावधानीसे पर भावुकताके साथ इसपर विचार करनेके लिये श्री राजगो-

पालाचारीके अंगरेजी शब्दोंका हिन्दी अनुवाद हम कर देते हैं—"नौकरशाहीकी निर्दयताका एक उदाहरण हमें मद्रास गवर्नमेंटकी उस कार्रवाईसे मिलता है जो उसने प्रतापनारायण वाजपेयीके साथ की है। इस वीर नवयुवकको अब मुक्ति मिल गई। कोई शासक अपने कठोर हाथोंको वहां नहीं पहुंचा सकता जहाँ इसकी आत्मा शान्तिके साथ अब विराजमान है। जब देवीदास गांधी मद्रासमें हिन्दी प्रचारके कार्यका सङ्गठन कर रहे थे, उस समय उन्होंने प्रतापनारायणका मुझसे परिचय कराया था और कहा था कि हिन्दी साहित्यसम्मेलनने जिन कार्यकर्ताओंको भेजा था, उनमें यह सबसे श्रेष्ठ थे। उसके आगेके कामने इस प्रशंसाको सार्थक बनाया। उसने आत्मत्याग और कष्टसहिष्णु-ताकी अनुपम शक्ति दिखलाई। उसके व्यक्तिगत दुःखों और वियोगोंकी हम चर्चा न करेंगे। इस महान आन्दोलनमें कोई भी शहीद ऐसा नहीं है जिसने एकान्तकी पवित्रतामें अपने सुखमय गार्हस्थ्य जीवनको दुःखमय न बनाया हो। हमारी महती माताका उद्धार उसी समय हो सकता है जब उसके कितने ही पुत्र अपना बलिदान इस प्रकार करेंगे। महात्माजीकी जेलयात्राके थोड़े ही दिन पीछे प्रतापनारायणको एक सालकी सख्त सजा इस कारण मिली कि उसने जमानत मुचलका देना नामंजूर कर दिया। जेलमें उसे एक भयावह बीमारी हो गयी पर वह पूरी अवधि काटनेपर गत अप्रेल मासमें छोड़ा गया। दवा करने वह फौरन बंगलोर गया पर वहां यह सुनकर कि

मेरी फिर पुकार हो रही है, वह लौटकर मजिस्ट्रेटके सामने गया और सालभरकी कड़ी सजाका उसे फिर हुक्म हुआ। इस प्रकार छूटनेके महीने भरके भीतर ही वह फिर जेल गया— स्वास्थ्य उसका नाश हो गया था पर उसकी आत्मा वैसी ही बलवती थी। अब सरकार और बीमारीकी घुड़दौड़ होने लगी कि कौन इसे पहले पाता है। धीरे-धीरे वह बहिरा, गूंगा और अन्धा हो गया। केवल एक अस्थिपञ्जर बच गया। यद्यपि बाहर आन्दोलन हो रहा था पर सरकारने उसे बन्दी ही रखना निश्चय किया; क्योंकि उसने किसी प्रकारका प्रतिज्ञापत्र देनेसे इन्कार कर दिया था। पर विगत ३ तारीखको जब उसकी मृत्यु निश्चित हो गयी वह एकाएक त्रिचनापल्ली जेलके बाहर एक मोटरकारपर बैठ गया। उसके साथ दो बोतलें रख दी गईं एकपर लिखा था 'काफकी दवा' और दूसरेपर कुछ नहीं। 'काफ' का अर्थ सम्भवतः जेलकी भाषामें 'कफ' (खांसी) था। क्षयीकी अन्तिम हालतमें होनेके कारण खांसीकी कोई शंका भी नहीं हो सकती थी। पर इस प्रकारकी लिखाईसे यह साफ था कि किस तरहसे सरकार अपने २००० बलिदानोंकी फिकर करती है, जो इस जेलमें बन्द हैं और जिनमें कितने ही राजनीतिक कैदी भी हैं। जब मोटरकार चल ही रही थी, एक आदमी जेलमेंसे भागता आया और यह कहता दवा उठा ले गया कि इस मरीजके लिये यह नहीं है। सम्भवतः ऐसा इस कारण किया गया कि कहीं कोई बाहरका डाक्टर दवाको

परीक्षा कर यह न देखने पावे कि जेलके भीतर मरीजोंकी कैसी फिकर होती है। खैर, इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि डाक्टर शास्त्री जो उसे लेने गये थे, अवश्य ही उसकी इससे ज्यादा फिकर करनेवाले थे। पर हो ही क्या सकता था? अपने मित्रों और उनके बच्चोंके बीच, जिनके लिये यह आत्मा तरस रही थी, वह मृत्युके दयामय आगमनकी प्रतीक्षा करने लगा। ५ तारीखको उसका शरीरान्त हुआ। उसके मुखपर उस समय भी हंसी थी। कावेरी नदीके किनारे उसकी अन्त्येष्टि क्रिया की गई और उसकी राख पानीमें डाल दी गई। उत्तर और दक्षिणके मेल करानेका उसने अपना अन्तिम कर्त्तव्य पालन कर दिया। पटनेके इस वीर बालकका नाम सदाके लिये दक्षिण भारतमें हिन्दी प्रचारके इतिहासमें अङ्कित रहेगा।"

'घर जल जाने दो'

५६

जब अमेरिका अपनी स्वतन्त्रताके लिये अंग्रेजोंसे घोर युद्ध कर रहा था उस समय कभी अंग्रेजी पलटन हारकर पीछे हटती और कभी अमेरिकनोंकी पल्टन पीछे हटनेके लिये बाध्य होती थी। एक मरतबा कुछ अंग्रेज भगोड़े एक अमेरिकन स्त्रीके घरमें जाकर छिप गये। उन भगोड़ेने उस स्त्रीको धमकाया कि अगर जरा भी भेद मालूम हुआ तो मैं मार डालूंगा। वह बेचारी चुप चाप बैठी रही। जब अमेरिकन

सैनिकोंको इस बातका पता लगा कि इस बुढ़ियाकी झोपड़ीमें कुछ अंग्रेज छिपे हैं तब उन्होंने उस मकानको घेर लिया। वे आग लगाने हीको थे कि सहसा एक बुढ़िया दिखाई पड़ी। बुढ़ियाको देखकर अमेरिकन सिपाही रुक गये। बुढ़ियाने तुरन्त सिपाहियोंसे कहा बुढ़ियाका घर जल जानेदो पर तुम आग लगाकर शत्रुको मारो। अमेरिकन सैनिकोंने ऐसा ही किया। देखते देखते धायं धायं मकान जलने लगा। अंग्रेज सैनिक निकलनेका प्रयत्न करने लगे, वैसे ही अमरीकन गोलीके शिकार हुए। बुढ़िया मकानके भीतर ही थी। लोगोंने उसे बहुत बचानेका यत्न किया पर उसने जलते जलते कहा—"मुझे जल जाने दो, मेरे मकानको जल जाने दो, पर दुश्मनोंको न छोड़ो" बुढ़िया अपने मकानके सहित अपने देशके लिये जल मरी।

'भूखे जान दे देंगे'

५७

हमीद अहमद साहबका संकल्प

—:❀:—

(किसान-प्रयाग)

आज मौलाना हमीद अहमद साहबके उपवासका नवां दिन है, मौलना बरेली सेंट्रेल जेलमें बन्द हैं, उपवासकी खबर किसी तौरसे दफ्तर खिलाफत कमेटी, बरेली तक पहुँची। मौलवी जहूरउद्दीन साहब सेक्रेटरी खिलाफत कमेटीने २६ सितम्बरको

मौलानासे मुलाकात की, चालीस मिनटतक बातचीत होती रही, मुख्तलिफ किस्मसे समझानेकी कोशिश की गई,लेकिन मौलानाके इस्तिक़बालमें कोई भी कमी नहीं हुई, यह देखकर कि उनकी कुल कोशिश रायगां गईं मौलवी जहूरुद्दीन साहबने मुझे तार दिया, २८ को मुझे तार मिला। उसी दिन मैं बहमराही मुंशी राजा हुसेन साहब, मुंशी मज़हर कायम साहब जो मौलानाके हकीकी भाई हैं, बरेलीको रवाना हो गये। हम लोगोंने २९ ता० को मौलानासे मुलाकात की। कैदखानेके अंदर एक पलंग बिछा दिया गया जिस पर मौलाना तशरीफ रखते थे। तीन कुर्सियां रख दी गई थीं. जिनपर हम लोग बैठे थे, मौलाना निहायत कमजोर हो गये हैं। चलनेमें उनका पांव लड़खड़ाता था, आवाज निहायत धीमी थी, चेहरा उतरा हुआ था, हमलोगोंको गुफ्तगूके लिये सिर्फ दस मिनट दिये गये थे, लेकिन हमलोग २० मिनट तक गुफ्तगू करते रहे। मुख़्तलिफ तरीकोंसे हम लोगोंने समझनेकी कोशिश की लेकिन कोई तदबीर कारगर न हुई। बात शुरू होते ही मौलानाने मुझसे कहा कि 'मैं आपकी हर बात आज तक मानता रहा और आज भी आपके हुक्मकी तामील करनेको तैयार हूँ। लेकिन इस खास मामलेमें मुझसे कुछ न कहिये। मैंने निहायत मजबूरीसे यह तरीका अख्तियार किया है। कष्ट जोकि कैदियोंपर मेरे सामने होते हैं और जिन नाजायज तरीकोंसे उनको तक़लीफ दी जाती है और उन्हें मारा जाता है उसे कोई इन्सान देख नहीं सकता। इसके अलावा

मज़हबी तकलीफ़ है। कैदियोंको नमाज़ जुमा तक अदा करनेकी इज़ाजत नहीं" इस गुफ्तगूके बाद मैंने उनको समझाना शुरू किया और मजहबी पहलूसे फ़ाकाकशीको नाज़ायज दिखानेकी कोशिश की। मौलानाके आंसू चलने लगे और उन्होंने जवाब दिया कि "मैं आपसे अपनी तकलीफ़ क्या बयान करूं। जहाँ तक मेरी जानका ताल्लुक है, मैं हर किस्मकी मुसीबतें झेलता रहा। तीन महीनेतक मुझे एक अन्धेरी कोठरीमें रखा, जहां न चिराग था, न हवाका गुजर। अक्सर रातोंको यह हुआ है कि सिर्फ एक साथी मेरा रफ़ीक था, जिसके खौफ़से सारी रात मैंने बिला किसी किस्मको हरकतके एक पहलु बैठकर सुबह की है। अक्सर मेरे मुंहसे खून आता रहा और मुझे मुख्तलिफ किस्मकी बीमारियां होगई हैं, लेकिन मैं आजतक अस्पतालमें नहीं रखा गया, मेरी तकलीफके किस्से बहुत लंबे चौड़े हैं, उनको जाने दीजिये। मैंने ये फाकाकशी अपने मुसाहिबके वजहसे नहीं की है मैं मुसीबत बर्दाश्त करनेको तैयार हूँ बल्कि ये फाकाकशी मैंने दूसरोंकी मुसीबतोंको दूर करनेके लिये की है। मजहबी लिहाजसे आपने जो कुछ कहा उसको मैं मानता हूँ, लेकिन मुझको मेरे अहदपर कायम रहने दीजिये। मुझे खुदाकी ज़ातसे उम्मीद है कि मेरी ये फाकाकशी मेरी पिछली कमजोरियों को दूर कर देंगी और अल्लाहताला मेरे पिछले गुनाहोंको मुआफ कर देगा।"

मैंने इसके बाद देरतक समझानेकी कोशिश की। उनके

दोनों भाइयोंने समझानेकी कोशिश की। बिलाखैर, उनके छोटे भाई जारओकतार रोने लगे और मौलानाके कदमसे लिपट गये। मौलानाके आंसू जारी हो गये, लेकिन आखिरमें उनका जवाब यह था "मुझे तकलीफ मत दो मेरी मुसीबतको मत बढ़ाओ। मैं इसी वजहसे तुमलोगोंसे मिलना नहीं चाहता था। आखीरमें उन्होंने मेरी तरफ फिरकर कहा कि "मेरी आखिरी ख्वाहिश है कि आप मेरी लाशको चीर न जाने दीजियेगा, मेरी लाश बजिनशऊ मुसलमानोंको दी जावे। आप मेरी निमाज-जनाजामें शरीक हूजियेगा और मेरे लिये दुआएँ खैर कीजियेगा" यह कहते हुए मौलाना वापस तशरीफ ले गये। मौलानाको चर्खा कातनेको दिया गया है और इस फाकाकशीके जमानेमें भी उनसे मेहनत ली जा रही है। अखबार उनको किसी किस्मका नहीं दिया जाता।

ता० १ अक्टूबर, सन् १९२१ ई० } सैयद कमालउद्दीन अहमद (जाफरी)



'बस दोस्त विदा'

५८

पेरिस नगर जर्मनोंसे घिरा पड़ा है। खाना-पीना मिलना दुश्वार है। कितने ही स्थानोंमें छोटे-छोटे नन्हें बालक दूधके बिना प्राण छोड़ रहे हैं। पेरिसमें जितने जन-जानवर मरे मिले, उन्हें भी लोग चट कर जाते थे। क्या करें। जान बड़ी प्यारी चीज है। किसी प्रकार उसकी रक्षा तो करनी ही चाहिये।

पर इस विषदकालमें भी दो मित्र मछली मारनेके लिये झीलके किनारे चल पड़े। दोनोंने अपनी-अपनी लकड़ी उठाई और मछली मारनेका कांटा संवारा। आनन्दपूर्वक दोनों झीलके किनारे पहुंच गये।

एक ओर सूर्योदयका लाल बिम्ब पानीपर पड़नेसे बड़ा ही सुहावना मालूम पड़ता था। कहीं-कहीं सुन्दर सलिलपर श्वेत सरसिजोंका समूह बह रहा था तो कहीं कहीं बत्तक टों-टों करके इधर-उधर घूम रहे थे। बकुलोंकी मण्डली छोटी-छोटी मछ-लियोंके पकड़नेमें व्यस्त थी। नाना प्रकारके रङ्ग-विरंगे पानीको देख दोनों मित्रोंके आनन्दकी सीमा न रही। दोनों मछली मारने बैठ गये।

दोनों अभी थोड़ी देरतक बैठे ही होंगे कि सहसा पीछे-से चार-पांच जर्मन सिपाही बन्दूक ताने दिखाई पड़े। विचारे अब कुछ कर भी नहीं सकते थे। लाचार होकर बन्दी हो जाना

पड़ा। जर्मन सिपाही एक रस्सीसे बांधकर दोनोंको ले चले।

थोड़ी ही दूरपर जर्मन सिपाहियोंका पड़ाव था। दोनों फ्रांसीसी सोवेज और मारिसेट जर्मन अफसरके सामने खड़े किये गये। अब यों परस्पर बातचीत होने लगी।

ज० अ०—जान पड़ता है तुम दोनों फ्रांसीसी गुप्तचर हो। अपना संकेत बता दो तो कुशल है नहीं तो गोलीसे मार दिये जाओगे।

सोवेज और मारिसेट दोनों चुप रहे। फिर जर्मन अफसरने कहा—अगर तुम दोनों संकेत नहीं बताओगे तो अभी तुम्हारी खोपड़ी चूर चूरकर दी जाती है। देखो बता दो और कुशल पूर्वक अपने बाल बच्चोंसे जा मिलो। यह बात किसीको मालूम न होगी।

फिर दोनों चुप रहे।

जर्मन अफसरने सोवेजको एकांतमें लेजाकर कहा—तुम क्यों अपनी जान दे रहे हो। तुम्हारे दोस्तको भी नहीं मालूम होगा।

सोवेजने कुछ जवाब नहीं दिया। जर्मन सिपाहियोंने मारिसेटको भी बहुत समझाया कि वह भेद बतादे लेकिन उसने भी कुछ जवाब न दिया। दोके दोनों चुप रहे।

अन्तमें जर्मन अफसरकी आज्ञासे दोनों मित्रोंको खड़ा किया गया और बीस जर्मन सिपाहियोंने एक कतारमें खड़े होकर बन्दूक सीधी की। जर्मन अफसरने फिर आखिरी बार पूछा

कि अब भी तुम्हारी जान बच सकती है।

दोनों मित्रोंने आकाशकी ओर दिखाकर इशारा किया—याने खुदा हमारा साथी है। इसके बाद दोनोंने हाथ मिलाया मानों आखिरी समय यह कह रहे हैं—"बस दोस्त विदा।"

दोनोंका हाथ मिलाना था कि सहसा तड़ तड़ करके गोली दोनोंकी छातीमें लगी और वे भूमिपर गिर पड़े। बहादुर वीरोंने मूक होकर अपनी जान अपने देशके लिये दे दी।

'हमारे पास गहरा सबूत है'

५९

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीने अपनी विज्ञप्ति नम्बर ५६८ में इस प्रकार लिखा है—

(१)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अपनी यह निश्चित और सप्रमाण धारणा प्रकट कर चुकी है कि सरकारी कर्मचारियोंने नाभानरेशको डरा धमकाकर उनसे राज्य त्याग कराया है और यह काम उस समय किया गया है जब कि महाराज अपने कर्मचारियोंके विश्वासघातसे शक्तिहीन हो गये थे। अब कमेटीको और ऐसा अखण्डनीय प्रमाण मिला है जिससे समस्त सिख समाजकी वह धारणा और दृढ़ होती है। भारत सरकार महाराजसे एक वक्तव्य हस्तगत करके अपनी सफाई देनेकी कोशिश कर रही है। ३१ जुलाईको गवर्नर जेनरलके एजेन्ट

कर्नल मिनचिन देहरादूनमें महाराजके बंगलेपर अचानक पहुँचे और महाराजके सामने एक लिखा हुआ कागज हस्ताक्षर करने के लिये पेश किया। उस कागजमें इस आशयकी बात लिखी थी कि महाराजने रियासत सोलहो आने अपने मनसे छोड़ी है और महाराज गद्दीपर फिरसे बिठाये जानेके आन्दोलनकी निन्दा करते हैं। पहलेकी तरह हस्ताक्षर करनेके लिये कहनेके साथ-साथ धमकी और भय प्रदर्शन भी किया गया। परन्तु एक विश्वस्त सूत्रसे सुननेमें आया है कि महाराजने ऐसे झूठे वक्तव्यपर हस्ताक्षर करनेसे साफ इन्कार किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीके पास इस बातके लिये बड़ा गहरा सबूत है। वह इस विषयमें अपनी जिम्मेदारी समझकर भारत सरकारको चुनौती देती है कि वह इन बातोंका खण्डन करे। सिख समाजके साथ जो गलती की गई उसे सुधारनेके लिये अब भी सरकारको समय है। सरकार इस बातकी स्वतन्त्र जाँच करना स्वीकार करे कि नाभा नरेशका गद्दी छोड़ना अपने मनसे हुआ है कि नहीं। यह जांच एक कमेटी द्वारा कराई जा सकती है जिसके दो मेम्बर सरकारके मनोनीत किये हुए ऊंचे दर्जेके ऐसे अफसर हों और जिनका इस मामिलेसे सम्बन्ध न हो और दो मेम्बर शिरो- मणि गुरुद्वारा कमेटीके मनोनीत किये हुए सिख समाजके प्रति- निधि स्वरूप हों। अगर सरकार इस बहुत ही उचित प्रस्तावको स्वीकार नहीं करेगी तो गुरुद्वारा कमेटी इस विषयका सब हाल प्रकाशित करनेको मजबूर होगी।

(२)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीने २ अगस्तको नीचे लिखा तार वायसरायके पास भेजा है—

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटीके पास इस बातका लिखा हुआ अखण्डनीय प्रमाण है कि नाभा नरेश अपनी इच्छाके विरुद्ध सरकारी अफसरों द्वारा डरा धमकाकर अपनी गद्दी छोड़नेके लिये लाचार किये गये हैं और इसके बाद इस वक्तव्यपर हस्ताक्षर करनेके लिये लाचार किये गये कि उन्होंने अपनी मरजीसे गद्दी छोड़ी। शिरोमणि कमेटी सिख समाजकी तरफसे भारत सरकारसे कहती है कि वह सिखोंके सन्तोषके लिये स्वतन्त्र जांच करावे। ऐसा न करनेसे सिख समाजको यह विश्वास करनेका हक होगा कि भारत सरकार इन बातोंकी सचाई स्वीकार करती है। (ता० ८-८-२३ कलकत्ता समाचार)

'मैं जुर्माना देकर छूटना नहीं चाहता'

६०

कलकत्तेके बहुतसे कांग्रेस वालन्टियर पकड़े गये। उनमेंसे कृष्णपाण्डे भी एक था। उसके ऊपर मुकदमा कायम हुआ।

अदालतकी कार्रवाईमें एक वकील श्रीयुत कृष्णपांडेकी तरफसे वकालतनामा लेकर अदालतके सामने उपस्थित हुए। उनको देखते ही श्रीकृष्ण पांडेने कहा कि मैंने किसीके नाम वकालतनामा नहीं लिखा है। इसलिये मेरी तरफसे पैरवी करनेका किसीको

अधिकार नहीं है। वकीलने कहा कि मैं आपकी तरफसे नहीं, आपके पिताजीकी तरफसे आया हूँ। वकीलने अदालतसे कहा कि इनके पिताकी यह प्रार्थना है कि श्रीकृष्णको अदालत कृपाकर छोड़ दे। वे इन्हें कलकत्तेके बाहर किसी स्थानमें रखनेपर भी राजी हैं। वकीलके कहनेपर अदालतने श्रीकृष्ण पांडेके पिताजीको जो जेलके बाहर आकर खड़े थे, अन्दर बुला लेनेकी आज्ञा दी। पिताके आते ही और उनके सूखे हुए चेहरेको देखकर श्रीकृष्णने हाथ जोड़कर उनसे कहा कि आप मेरे व्रतमें बाधा न डालें।

अदालतने पूछा, "क्या तुम अपने पिताके साथ रहना नहीं चाहते?"

उत्तर—इसका यहां कोई सवाल नहीं है। मैं अदालतसे प्रार्थना करके पैरवी कराके या जुर्माना देकर छूटना नहीं चाहता। यदि पिताजी जुर्माना दे भी देंगे तो मैं यहांसे न जाऊंगा।

अदालतने तब ऐसा प्रबंध किया कि पिता पुत्र दोनों एक अलग कोठरीमें भेजे गये। वहां उनकी बातचीत हुई। थोड़ी देर बाद दोनों बाहर निकले फल कुछ नहीं हुआ। श्रीकृष्ण पांडेके पिताने सबके सामने शुक्लजीसे कहा कि आप इसको समझाइये। शुक्लजीने कहा कि आप मत घबराइये। आपका लड़का भी मेरे लिये अपने लड़केके समान है।

आखिर अदालतको सजा सुनानी पड़ी। पांच पांच रुपया जुर्माना या ३ दिन सादी कैदकी सजा सुनाई गई। यह कहने-

की आवश्यकता नहीं कि सबने ३ दिन जेलमें रहना ही स्वीकार किया। आदिसे अन्ततक सब प्रसन्न थे। किसीने जुर्माना न दिया।

'सहानुभूति रखनेवाला मुसलमान'

६१

२८ जुलाईकी रातको माता नामक एक गरीब मुसलमान जिसके दिलमें रियासतका प्रेम कूट कूटके भरा है, अपने मित्रसे कह रहा था कि उन नमकहरामोंका खाना खराब हो जिन्होंने रियासतकी यह गत की है। पास ही एक प्रसिद्ध अहल्कार सुन रहा था, वह आग बगूला हो गया और पुलिसमें जाकर शिकायत की। इसपर माता दफा १०७ के अनुसार गिरफ्तार कर लिया गया और भी ४५ आदमी पकड़े गये। जिनके मुकद्मोंका फैसला हो चुका है उनकी मिसलें फिर तलब की गई हैं।

समाप्त